राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

विद्युत जामवाल ने क्रैक...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

गुरुवार, 17 नवंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 09 अंकः 327 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

जी20 घोषणापत्र में पीएम मोदी के संदेश की गूंज, 'आज का युग युद्ध का नहीं होना चाहिए'

बाली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सितंबर में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बातचीत में जो संदेश दिया था उसकी प्रतिध्वनि जी20 शिखर सम्मेलन के घोषणापत्र में बुधवार को सुनाई दी। घोषणापत्र में नेताओं ने यूक्रेन युद्ध को तत्काल खत्म करने का आह्वान करते हुए कहा कि "आज का युग, युद्ध का युग नहीं होना चाहिए।" दो दिवसीय शिखर सम्मेलन के अंत में एक विज्ञप्ति जारी की गई जिसमें यूक्रेन पर रूसी आक्रमण और दुनिया के लिए इसके प्रभावों पर व्यापक रूप से विचार–विमर्श किया गया। इसमें कहा गया, "संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान, संकटों को दूर करने के प्रयास, साथ ही कूटनीति और संवाद महत्वपूर्ण हैं। आज का युग युद्ध का नहीं होना चाहिए।" शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के इतर 16 सितंबर को उज्बेकिस्तान में पुतिन के साथ अपनी द्विपक्षीय बैठक में मोदी ने कहा था "आज

का युग, युद्ध का नहीं है" और उन्होंने संघर्ष को समाप्त करने के लिए रूसी नेता से आग्रह किया था। इंडोनेशियाई राष्ट्रपति जोको विडोडो का कहना है कि जी20 घोषणापत्र में रूस–यूक्रेन पैराग्राफ पर गहन चर्चा हुई थी। जी20 बाली घोषणापत्र में रूस–यूक्रेन युद्ध को लेकर मतभेदों की बात स्वीकार करते हुए कहा गया कि अधिकांश सदस्यों ने इसकी कड़ी निंदा की है। घोषणापत्र के मुताबिक अधिकतर सदस्यों का कहना है कि यूक्रेन युद्ध भारी मानवीय पीड़ा का कारण बना जिसने वैश्विक अर्थव्यवस्था में मौजूदा कमजोरियों को बढ़ाया। अधिकांश सदस्यों ने कहा कि यूक्रेन युद्ध से विकास बाधित हुआ, मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई और ऊर्जा व खाद्य असुरक्षा बढ़ी। बाली घोषणापत्र में यह भी कहा गया कि शांति और स्थिरता की रक्षा करने वाले अंतरराष्ट्रीय कानून और बहुपक्षीय व्यवस्था को कायम रखना जरूरी है। इसमें सशस्त्र संघर्षों में नागरिकों की सुरक्षा सहित अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का पालन करने का आह्वान भी किया गया।

प्रेमिका की जान का दुश्मन बना सूफियान, धर्म बदलने के दबाव के बीच प्रेमिका के साथ किया ऐसा काम, थम गई सांसे

लखनऊ। एक तरफ दिल्ली श्रद्धा वॉकर की मौत के तरीके से दहली हुई है इसी बीच उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां जबरन धर्म परिवर्तन कर शादी से इंकार करने पर नाबालिग किशोरी को बिल्डिंग से नीचे फेंका गया, जिसके बाद उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक राजधानी लखनऊ के दुबग्गा स्थित डूडा कॉलोनी में ऐसे मर्डर मॉड्यूल का खुलासा हुआ है, जिसने होश उड़ा दिए है। सुफियान नामक व्यक्ति पर आरोप है कि उसने एक हिंदू किशोरी को छत से नीचे फेंक दिया। किशोरी को परिजनों ने ट्रॉमा सेंटर में भर्ती किया जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़

दिया। जानें पूरा मामला: धर्मांतरण की कोशिशों को लेकर हुए झगड़े में एक युवक ने अपनी 19 वर्षीय प्रेमिका को कथित तौर पर चौथी मंजिल से धक्का दे दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। एक पुलिस अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मृतका के परिजनों का आरोप है कि उसका मुस्लिम प्रेमी उस पर धर्मांतरण के लिए दबाव बना रहा था। पुलिस के मुताबिक, घटना के बाद से ही आरोपी फरार है और उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस की पांच टीमें गठित की गई हैं। पुलिस ने सुफियान और उसके परिजनों के खिलाफ हत्या समेत कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। संयुक्त पुलिस आयुक्त (जेसीपी) पीयूष मोर्डिया ने पत्रकारों से कहा कि घटना मंगलवार रात दुबग्गा थाना क्षेत्र में हुई। मृतक लड़की अपने परिवार के साथ आरोपी सूफियान के घर गई थी और जब दोनों परिवार के सदस्य आपस में बात कर रहे थे, तभी आरोपी लड़की को इमारत की चौथी मंजिल पर ले गया और उसे वहां से कथित तौर पर धक्का दे दिया। जेसीपी ने कहा कि लड़की और आरोपी पड़ोसी थे। दोनों के परिवार वाले उनके रिश्ते के खिलाफ थे। पुलिस के अनुसार, सूफियान ने लड़की को एक मोबाइल फोन दिया था और जब लड़की के घरवालों को इस बात का पता चला तो वे सूफियान के घर पहुंचे, जहां दोनों पक्षों के बीच इस बात को लेकर झगड़ा हुआ। पुलिस ने मृतका की मां की ओर से दायर शिकायत के आधार पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। जेसीपी ने कहा कि मृत लड़की के परिवार वालों ने आरोप लगाया है कि आरोपी उस पर धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बना रहा था। हमारी टीमें मामले की जांच कर रही हैं। आरोपी युवक की गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए गए हैं।

डेंगू के बढ़ते प्रभाव के दृष्टिगत बस स्टेशनों पर रखें साफ सफाई की उत्तम व्यवस्था : दयाशंकर सिंह

लखनऊ (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने प्रदेश के सभी बस स्टेशनों की साफ–सफाई, पुताई, लाइटिंग, साज–सज्जा एवं डेंगू के प्रसार को देखते हुए पेयजल की समुचित व्यवस्था रखने के निर्देश परिवहन निगम के अधिकारियों को दिये हैं। इसके अनुपालन में एमडी परिवहन निगम संजय कुमार ने बताया कि इटावा व मैनपुरी के बाद अब महोबा बस स्टेशन के सौन्दर्यीकरण का कार्य कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि बस स्टेशन की समस्त भवनों एवं बाउन्ड्रीवाल की सफेदी से पुताई, नगर पालिका महोबा के सहयोग

से नये डस्टविन एवं समय–सारणी चार्ट व किराया सूची को पुनरीक्षित कराते हुये प्रदर्शित करवा दिया गया है। यात्री बेन्चों की मरम्मत, साफ–सफाई एवं पेंटिंग कराकर स्थापित करवा दिये गये हैं। एमडी परिवहन निगम ने बताया कि पूछताछ केंद्र में उद्घोषण यंत्र सुचारू अवस्था में कार्य करे तथा समय–समय पर बसों से संबंधित उद्घोषणा किये जायें, जिससे कि यात्रियों को बसों के आवागमन की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो सके। उन्होंने बताया कि डिपो के मिनी गार्डन की समुचित ढंग से साफ–सफाई कराते हुये उचित रखरखाव हेतु निर्देशित कर दिया गया है। बस स्टेशन के मुख्य भवन में तिरंगा लाइटें लगवा दी गयी है, जो रात्रि के समय बस स्टेशन की शोभा बढातें हैं। बुकिंग काउन्टर को सुचारू रूप से संचालित करवा दिया गया है। बिकलांग एवं वृद्धजनों हेतु व्हील चेयर उपलब्ध करवा दी गयी है।

श्रद्धा की हत्या के बाद आफताब गया था डॉक्टर के पास, दोनों के बीच हुई बातचीत का हुआ खुलासा

नई दिल्ली। देशभर में सनसनी मचाने वाले श्रद्धा वाकर मर्डर मामला लगातार चर्चा में बना हुआ है। मोहब्बत से शुरू हुई कहानी का खूनी अंजाम देखकर हर कोई खौफ में है। वहीं इस मामले में अब एक डॉक्टर की भी एंट्री हुई है। श्रद्धा की हत्या करने के बाद आफताब जब उसके शव के टुकडे कर रहा था, उस दौरान आफताब के हाथ में चोट लग गई थी। अब जिस डॉक्टर ने आफताब की इस चोट का इलाज किया था, उन्होंने भी बयान दिया है। ये डॉक्टर अनिल सिंह है, जिन्होंने बताया कि आफताब ने मई के महीने में उनसे मुलाकात की

थी। आफताब ने डॉक्टर से मिलने के बाद अपने हाथ में लगी चोट पर टांके लगवाए थे। दरअसल आफताब ने डॉक्टर को बताया था कि फल काटने के दौरान उसको चोट लग गई है। वो सुबह के समय टांके लगवाने आया था। पर्चे पर दवाई लिखवाने के बाद आफताब डॉक्टर के पास से चला गया था। डॉक्टर ने बताया कि वो घाव बहुत अधिक गहरा नहीं था, काफी हल्का था इसलिए इसमें किसी तरह का शक होने की संभावना नहीं थी। उन्होंने बताया कि आफताब का इलाज करने के दौरान वो उससे बात करते रहे। इस दौरान आफताब उन्हें काफी साहसी और आत्मविश्वासी प्रतीत हुआ था। डॉक्टर के मुताबिक आफताब इस दौरान अंग्रेजी में बातचीत करता रहा। उसने ये भी बताया था कि वो मुंबई से दिल्ली आया है ताकि उसे यहां आईटी क्षेत्र में अधिक अवसर मिल सकें। डॉक्टर को नहीं हुआ संदेहः आरोपी द्वारा इस तरह आत्मविश्वास से कई गई बातचीत और उसके हाव भाव के कारण डॉक्टर को इस बात का शक नहीं हुआ कि आफताब आरोपी है। डॉक्टर ने पुलिस द्वारा की गई पूछताछ में बताया कि उसे संदेह नहीं हुआ कि वो किसी की हत्या कर हाथ में लगी चोट का इलाज कराने आया है। बता दें कि डॉक्टर की फीस और दवाई के खर्च का भुगतान करने के लिए आफताब ने ऑनलाइन पेमेंट की थी।

आरोपी ने देखी थी कई सीरीजः पुलिस की जांच में खुलासा हुआ है कि आरोपी ने शव को ठिकाने लगाने से पहले कई तरह की सीरीज देखी थी।

ममता ने बंगाल से जुड़े प्रवासी श्रमिकों की लगातार रहस्यमय मौतों पर सवाल उठाया

कोलकाता । मिजोरम में पत्थर खदान ढहने से 12 मजदूरों में से पांच की मौत पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को राज्य के प्रवासी श्रमिकों की लगातार मौतों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने यहां मीडियाकर्मियों से कहा, पिछले कुछ महीनों के आंकड़ों की तुलना करके देखें तो हाल के दिनों में विभिन्न दुर्घटनाओं में मारे गए प्रवासी श्रमिकों में से अधिकांश पश्चिम बंगाल के थे। हो सकता है अन्य राज्यों के प्रवासी श्रमिकों की भी कहीं और मौतें हुई हों। लेकिन मरने वालों की संख्या सबसे अधिक उन लोगों की रही है, जो पश्चिम बंगाल से थे। मिजोरम, कश्मीर और मणिपुर का उदाहरण लीजिए। मुझे नहीं पता कि ये क्या हो रहा है। हाल ही में मिजोरम में पत्थर की खदान ढहने से पश्चिम बंगाल के पांच मजदूरों की कथित तौर पर मौत हो गई थी, जिनमें से चार नदिया जिले के थे और एक उत्तर 24 परगना जिले के थे। मुख्यमंत्री ने पीडिघ्त परिवारों को आर्थिक सहायता के साथ–साथ पांच परिवारों में से प्रत्येक के एक सदस्य को राज्य सरकार की नौकरी का आश्वासन दिया।

पसमांदा मुस्लिम समाज' का राग भाजपा व आरएसएस का नया शिगुफा : मायावती

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी द्वारा मुस्लिम पसमांदा समाज सम्मेलन आयोजित करने पर निशाना साधते हुए बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने बुधवार को इसे भाजपा व आरएसएस (राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ) का नया शिगूफा बताया। बसपा प्रमुख ने बुधवार को ट्वीट किया, केवल संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ की खातिर 'पसमांदा मुस्लिम समाज' का राग भाजपा व आरएसएस का अब नया शिगुफा है। मुस्लिम समाज, पहले मुसलमान हैं तथा उनके प्रति, इनकी (भाजपा, संघ) सोच, नीयत, नीति क्या है, यह किसी से भी छिपा नहीं।

उन्होंने कहा, भाजपा की मुस्लिम समाज के प्रति नकारात्मक सोच का परिणाम है कि इनकी सरकार में भी वे लगभग उतने ही गरीब, पिछड़े, त्रस्त एवं जान–माल–मजहब के मामलों में असुरक्षित हैं जितने वे कांग्रेसी राज में थे। मुस्लिम समाज का, दलितों की तरह उपेक्षित रहना अति–दुःखद व दुर्भाग्यपूर्ण। गौरतलब हैं कि पिछले सप्ताह मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र रामपुर में उपचुनाव के बीच भारतीय जनता पार्टी ने लाभार्थी सम्मेलन के रूप में पसमांदा मुसलमानों की भीड़ जुटाई थी।

बेंगलुरु टेक समिट में पीएम नरेंद्र मोदी का बयान, भारत ने गरीबी के खिलाफ जंग में तकनीक को बनाया हथियार

बेंगलुरु। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस समय बाली में हैं। वहां पर जी20 देशों की बैठक चल रही हैं। इसी बीच बेंगलुरु टेक समिट में पहले से रिकॉर्ड किए गए संदेश के माध्यम से पीएम मोदी ने कहा कि महामारी के दौरान, कम डेटा लागत ने गरीब छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में मदद की। वरना छात्र पूरे 2 साल शिक्षा से वंचित रह जाते। भारत प्रौद्योगिकी का उपयोग गरीबी के खिलाफ एक हथियार के रूप में कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि भारत गरीबी के खिलाफ जंग में

तकनीक को हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने बेंगलुरु टेक समिट में वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए कहा कि भारत को अब लालफीताशाही के लिए नहीं जाना जाता, बल्कि इसकी पहचान निवेशकों को हर तरह की सुविधा देने वाले देश के रूप में है। प्रधानमंत्री ने उद्घाटन भाषण में कहा कि 2021 के बाद से यूनिकॉर्न स्टार्टअप की संख्या दोगुनी हो गई है। उन्होंने कहा, आपके निवेश और हमारे नवाचार से चमत्कार हो सकता है। आपका भरोसा और हमारी तकनीकी प्रतिभा मिलकर कुछ भी कर सकते हैं। बेंगलुरु टेक समिट में पीएम मोदी ने कहा, ष्आपका निवेश और हमारा इनोवेशन चमत्कार कर सकता है। आपका भरोसा और हमारी तकनीकी प्रतिभा चीजों को संभव बना सकती है।

आप का दावा– गुजरात में पार्टी कैंडिडेट का हुआ अपहरण, चुनाव आयोग के ऑफिस के बाहर कार्यकर्ताओं के साथ धरने पर बैठे मनीष सिसोदिया

अहमदाबाद। गुजरात विधानसभा चुनाव जैसे–जैसे नजदीक आ रहा है, चुनावी सरगर्मी तेज हो रही है। अब आम आदमी पार्टी ने बड़ा आरोप लगाते हुए दावा किया है कि पार्टी की प्रत्याशी कंचन जरीवाला का अपहरण हो गया। इसके साथ ही चुनाव आयोग के ऑफिस के बाहर कार्यकर्ताओं के साथ मनीष सिसोदिया धरने पर बैठे नजर आए। दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा गुजरात में हार के डर से बौखला गई है। पूर्वी सूरत से आप के उम्मीदवार कंचन जरीवाला को भाजपा के गुंडों ने किडनैप किया। वह आरओ दफ्तर गए थे जब भाजपा ने उन पर अपनी उम्मीदवारी को वापस लेने के लिए दबाव डाला। भाजपा ने गुजरात के सूरत (पूर्व) से हमारी उम्मीदवार कंचन जरीवाला का अपहरण कर लिया

है। उन्हें आखिरी बार कल आरओ कार्यालय में देखा गया था। उन्होंने उनका नामांकन रद्द कराने की कोशिश की। बाद में उन पर नामांकन वापस लेने का दबाव बनाया गया। इससे चुनाव आयोग पर सवाल उठते हैं। गुजरात से सूरत (पूर्व) से आपकी उम्मीदवार कंचन जरीवाला को अभी–अभी रिटर्निंग ऑफिसर के कार्यालय लाया गया है। उन्हें 500 से अधिक पुलिसकर्मियों ने घेर लिया था और अब उन पर नामांकन वापस लेने का दबाव डाला जा रहा है। मनीष सिसोदिया ने कहा कि देश में पहली बार हो रहा है कि बीजेपी के गुंडों और पुलिस ने मिलकर किसी प्रत्याशी का गनप्वाइंट पर नामांकन वापस करवाया। पुलिस ने नामांकन वापस लेने के बाद आप प्रत्याशी को बीजेपी के गुंडों को सौंप दिया। चुनाव आयोग इसे गंभीरता से लेकर सखघ्त कार्रवाई करें। चुनाव आयोग के लिए इससे बड़ी एमेरजेंसी क्या हो सकतो है? इसीलिए तुरंत एक्शन की प्रार्थना लेकर हम लोग केंद्रीय चुनाव आयोग के दरवाजे पर आए हैं। वहीं दिल्ली की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा ने टिकट के बदले नोट मामले में आप विधायक अखिलेश पति त्रिपाठी के साले समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है. आप कार्यकर्ता शोभा खारी, गोपाल खारी की पत्नी ने टिकट की मांग की थी, कथित तौर पर विधायक त्रिपाठी ने इसके बदले में 90 लाख रुपये की मांग की।

कौमी उर्दू शिक्षक कर्मचारी संघ का सम्मेलन हुआ आयोजित

बहराइच। कौमी उर्दू शिक्षक कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश देवीपाटन मंडल बहराइच शाखा के तत्वावधान में आयोजित देवी पाटन मण्डल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन समाज सेवी मोहम्मद अब्दुल्ला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मौलाना अबुल कलाम आजाद जूनियर हाईस्कूल नाजिर पुरा में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष कौमी उर्दू शिक्षक कर्मचारी संघ चौधरी वासिल अली ने शिरकत की।साथ ही प्रांतीय जनरल सेक्रेटरी मंसूर आलम, अम्मार अली सिद्दीकी लखनऊ, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष तालिब हसन,को जां निसार लखनऊ,अफीउददीन उन्नाव, मोहम्मद याकूब सिद्दीकी गोण्डा के अलावा बड़ी संख्या में बहराइच , गोण्डा, बलरामपुर, श्रावस्ती के उर्दू शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया।इस अवसर पर मजहर सईद, मोहम्मद इलियास, मोहम्मद हलीम ,कलाम अहमद,नूर मोहम्मद को सेवानिवृत्त के बाद प्रशस्ति पत्र व शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। देवीपाटन मंडल की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी वासिल अली, प्रांतीय जनरल सेक्रेटरी मंसूर आलम, अम्मार अली सिद्दीकी लखनऊ, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष तालिब हसन,को जां निसार लखनऊ,अफीउददीन उन्नाव, मोहम्मद याकूब सिद्दीकी गोण्डा के अलावा बड़ी संख्या में बहराइच , गोण्डा, बलरामपुर, श्रावस्ती के उर्दू शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया।इस अवसर पर मजहर सईद, मोहम्मद इलियास, मोहम्मद हलीम ,कलाम अहमद,नूर मोहम्मद को सेवानिवृत्त के बाद प्रशस्ति पत्र व शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। देवीपाटन मंडल की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी वासिल अली व प्रांतीय जनरल सेक्रेटरी मंसूर आलम की जानिब से शफीक अहमद बागबान, समी उद्दीन ए उर्दू सम्मान से शाल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।इसी के साथ यास्मीन बानो बलहा, मोहम्मद कलीम अंसारी, मोहम्मद इरफान चित्तौरा,जुनेद अंसारी,तनवीर अहमद,फखरे आलम, फखरपुर,उम्मे हानी हुजूर पुर,शाहीन बेगम,मुनौवर मिर्जा श्रावस्ती, खालिदा बेगम रिसिया समेत दर्जनों उर्दू शिक्षक शिक्षिकाओं को सम्मान पत्र व शाल भेंट कर सम्मानित किया।इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी वासिल अली व प्रांतीय जनरल सेक्रेटरी मंसूर आलम की जानिब से शफीक अहमद बागबान, समी उद्दीन सीता पुर,जमाल अजहर सिद्दीकी,रईस अहमद सिद्दीकी को राष्ट्रीय संगठन के द्वारा शाल व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रांतीय संगठन सचिव शफीक अहमद बागबान, जिला अध्यक्ष जमाल अजहर सिद्दीकी, मोहम्मद अब्दुल्ला, सलीम सिद्दीकी,अफीउददीन,हाजी अनवर अली मेकरानी,अज्म गोंडवी के अलावा राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी वासिल अली ने सम्बोधित किया।इस कार्यक्रम का संचालन देवीपाटन मंडल अध्यक्ष रईस अहमद सिद्दीकी ने किया।

प्रदेश स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता का सांसद ने किया शुभारंभ

अयोध्या। अयोध्या के मकबरा स्थित डॉक्टर भीमराव अंबेडकर राजकीय विद्यालय क्रीड़ा संस्थान स्पोर्ट स्टेडियम में तीन दिवसीय प्रदेश स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 66वीं विद्यालय बालक, बालिका क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ सांसद लल्लू सिंह ने किया।यह प्रतियोगिता 15 नवम्बर से प्रारंभ होकर 18 नवंबर को समाप्त होगी। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आए सांसद लल्लू सिंह व विशिष्ट अतिथि के तौर पर पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता बीसीसीआई ज्ञानेंद्र पांडे रहे. संयुक्त शिक्षा निदेशक अरविंद कुमार पांडे ने सांसद लल्लू सिंह को मोमेंट व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया. इस कार्यक्रम में जिला संयुक्त शिक्षा निदेशक अरविंद कुमार पांडे जिला विद्यालय निरीक्षक राजेश कुमार पांडे, एम् पि एल एल आदर्श इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य वरुण प्रताप सिंह विद्यालय जिला सचिव धर्मेंद्र सिंह व आदि सम्मानित लोग मौजूद रहे। वही मुख्य अतिथि के तौर पर आए सांसद लल्लू सिंह ने बताया तीन दिवसीय प्रदेश स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता यहां पर हो रही है मुझको भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है। मैं सभी को धन्यवाद करता हूं। और बच्चों में खेल के प्रति रुझान बड़े देश की एकता अखंडता देश के सर्वांगीण विकास के लिए खेल से अच्छा कोई मैदान नहीं है। जहां से तेज गति से देश का विकास किया जा सकता है। क्योंकि बचपन से हम भी खिलाड़ी रहे। यहां पर स्पोर्ट स्टेडियम में कुछ चीजों की सुधार के लिए सौंदर्यीकरण के लिए जिससे खिलाड़ी को असुविधा ना हो। सभी खिलाड़ी अच्छा खेल सके हर तरह की सुविधाएं खिलाड़ियों को दी जाएंगी। उसके लिए मुझे चाहे अपनी निधि से इस स्टेडियम का सुंदरीकरण करवाना पड़े करवाऊगा। कल भारत सरकार के खेल मंत्री ने सभी सांसदों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से खेल को कैसे बढ़ावा दिया जाए सुझाव मांगा है। और कहा कि खेल को सभी विद्यालय में अनिवार्य किया जाए। जो विद्यालय में खेले नहीं होगा उस विद्यालय की मानता रद्द की जाएगी तभी खेल को बढ़ावा मिलेगा। और खिलाड़ियों को नौकरियों में अन्य स्थानों में आरक्षण देकर प्रोत्साहित किया जाए।

'आप' ने निकाली 'गंदगी हटाओ–झाड़ू चलाओ' पदयात्रा

–नगर निकायों को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना, शहर को स्वच्छ बनाना आप का चुनावी मुद्दारू सभाजीत सिंह

अयोध्या। आम आदमी पार्टी ने नगर निकाय चुनाव को लेकर उत्तर प्रदेश के हर जिले में झाड़ू चलाओ गंदगी हटाओ पदयात्रा निकालकर नगर निगम नगर पालिका और नगर पंचायतों में फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ. 3 नवंबर से 15 नवंबर तक चलाए जा रहे अभियान को लेकर आम आदमी पार्टी उत्तर प्रदेश चुनाव समिति के अध्यक्ष सभाजीत सिंह के नेतृत्व में अयोध्या के रीड गंज में पार्टी कार्यालय से लेकर गुदड़ी बाजार होते हुए नियावां चौराहे तक आप ने गंदगी हटाओ झाड़ू चलाओ पदयात्रा निकाली. सभाजीत सिंह ने कहा कि गंदगी हटाओ –झाड़ू चलाओ अभियान को पूरे प्रदेश में व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ है. उन्होंने कहा कि नगर निगम को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना शहर को स्वच्छ बनाना आप का चुनावी मुद्दा होगा उन्होंने जनता से अपील भी की कि निकाय चुनाव में एक मौका आम आदमी पार्टी को दें . उन्होंने कहा कि नगर निगम, नगर पालिका और नगर पंचायतों की लापरवाही और भ्रष्टाचार के चलते आज जगह–जगह गंदगी का जमावड़ा है जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियां पनप रही है. सफाई की स्थिति बेहद खराब है, सड़कों के किनारे गंदगी के ढेर जमा है और ऐसे दुर्गंध पूर्ण वातावरण में सड़क के किनारे चलना भी जनता का दुश्वार हो चुका है. उन्होंने कहा कि सीवेज सिस्टम की बात करें तो आधे से अधिक शहर को अभी तक सीवेज सिस्टम से नहीं जोड़ा जा सका है। उन्होंने कहा कि गड्ढा युक्त सड़कें भी बड़ी समस्या हैं। नगर निगम में गड्ढा मुक्त सड़कें बनाने के लिए करोड़ों का बजट आता है। बावजूद इसके सड़कों के गड्ढे दूर नहीं हो पा रहे हैं। सड़कों पर चलते आवारा पशुओं पर भी प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यह राहगीरों के लिए खतरा है, इनके कारण दुर्घटनाएं होती रहती हैं. चुनाव समिति के अध्यक्ष सभाजीत सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी का अपने प्रत्याशियों को निकाय चुनाव में उतारने का उद्देश्य नगरीय विभागों में भ्रष्टाचार, फर्जी नियुक्तियां, विभागीय त्रुटियां, गंदगी का जमावड़ा, लापरवाही जैसी तमाम कमियां दूर कर जनता को लाभ पहुंचाना है. उन्होंने कहा कि जनता ने आज तक सभी राजनीतिक दलों को परख लिया है और उनके झूठे वादों से अच्छा खासा नुकसान भी उठाया है इसलिए अबकी बार गंदगी को साफ करने की जिम्मेदारी आम आदमी पार्टी झाड़ू वालो को मौका दे । इस अवसर पर जिला अध्यक्ष अनिल कुमार प्रजापति, पंचायत प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष विनय पटेल जिला प्रभारी तरुण सिंह, मोहित महराज, यूथ विंग के प्रदेश महासचिव अंकित परिहार रुदौली विधानसभा के प्रभारी मनोज मिश्रा बीकापुर विधानसभा के प्रभारी सुनील कुमार श्रीवास्तव नदीम रजा हर्षवर्धन कोरी यूथ विंग के उपाध्यक्ष शुभ पांडे, सुनील कुमार मौर्य शुभम श्रीवास्तव नवीन यादव प्रदीप सोनी रंजीत यादव रामशरण यादव रमेश राजकुमार मोहम्मद आसिफ विकास वर्मा स्वर्णिम वर्मा शिव प्रकाश मोहम्मद इसराइल सूरज प्रधान गुड़िया राईन अशोक गौड़ मोहम्मद शकील धर्मेंद्र सेठ क्वेश्चन लाल श्रीवास्तव इरफान खान शहजाद खान सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल थे।

लेखपाल राजस्व विभाग की रीढ़ की हड्डी : मुख्य राजस्व अधिकारी

बहराइच स उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ का 60वां स्थापना दिवस अमीनपुर नगरौर स्थित वृद्धाश्रम में संवासियों के बीच धूमधाम से मनाया गया।स्थापना दिवस के अवसर पर संवासियों को गर्म शाल व मिष्ठान का वितरण भी किया गया।वही कार्यक्रम के मुख्यातिथि मुख्य राजस्व अधिकारी अवधेश कुमार मिश्र व विशिष्ट अतिथि एसडीएम सदर सुभाष सिंह धामी,तहसीलदार सदर राज कुमार बैठा,समाज कल्याण अधिकारी रमा शंकर गुप्ता व सुलह अधिकारी राकेश चन्द्र श्रीवास्तव रहे।स्थापना दिवस को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अवधेश कुमार मिश्रा ने कहा कि लेखपाल राजस्व विभाग की रीढ़ की हड्डी व गांव के कलेक्टर है।उन्होंने कहा कि हमारे जनपद में लेखपालों की टीम बहुत अच्छे ढंग से कार्य कर रही है।कार्यक्रम के अंत मे लेखपाल संघ के जिलाध्यक्ष जयराज सिंह व जिला मंत्री महेन्द्र कुमार मिश्रा द्वारा आए हुए आगुन्तकों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।इस अवसर पर आशुतोष प्रताप सिंह,अवधेश कुमार, सुनील कुमार अवस्थी,कर्मवीर सिंह,रोहित शुक्ला,पवन चौहान,शिव कुमार यादव,मनीष कुमार वर्मा,नीरज शर्मा,लाल बहादुर शुक्ला,मुकेश यादव,राकेश वर्मा व वृद्धाश्रम के प्रबन्धक दिलीप कुमार द्विवेदी मौजूद रहे।

मंदिर के पास महीनों से गड्ढा होने पर सभासद ने एतराज जताया

दैनिक बुद्ध का संदेश

तुलसीपुर/बलरामपुर। के नगर वासियों तथा नगर प्रशासन से अपील करते हुए करते हुए वार्ड नंबर 10 में शिव मंदिर के सामने मुख्य मार्ग पर विगत 1 महीने से पाइप लाइन कनेक्शन हेतु यह गड्ढा खोदा

गया था जो कि अभी तक पाटा नहीं गया है ना ही ऊपर से इंटरलॉकिंग किया गया है जिससे आवागमन पूरी तरह से बाधित हो गया है ना तो पब्लिक ना तो किसी प्रकार का वाहन ना तो छोटे बड़े पशु का निकलना दूभर हो गया है कभी भी कोई घटना घट सकती है क्योंकि शिव मंदिर से सटा मार्ग है जिससे वार्ड वासियों एवं नगर वासियों को जलाभिषेक करने में बड़ी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है गड्ढा पूरी तरह से जब जलमग्न हो गया है और पूरे गड्ढे में चारों तरफ मच्छरों का आतंक फैला हुआ है जिससे कि नाना प्रकार की बीमारियों का डर बना हुआ है इन सभी बातों की जानकारी व्हाट्सएप द्वारा मैंने अधिशासी अधिकारी महोदय नगर पंचायत तुलसीपुर को दे चुका हूं अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

26 दिसंबर से हॉकी मैदान पर शुरू होगा हॉकी का महाकुंभ

देश भर से 14 टीमें करेंगी प्रतिभाग

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। महाराजा सर भगवती प्रसाद सिंह अखिल भारतीय

प्राइजमनी हॉकी टूर्नामेंट एम एल के पी जी कॉलेज के हॉकी मैदान पर 26 से 30 दिसंबर को खेला जायेगा। टूर्नामेंट में देश की 14 नामचीन टीमें हिस्सा लेंगी। बुधवार को महाविद्यालय के पुस्तकालय सभागार में आयोजित तैयारी बैठक में उक्त निर्णय लिया गया। महाविद्यालय प्रबंध समिति के सचिव व टूर्नामेंट अध्यक्ष लेफ्टिनेंट कर्नल आर के मोहन्ता ने बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि यह टूर्नामेंट स्वतंत्रता के पूर्व से राज परिवार व नगर के गणमान्य नागरिक के सहयोग से होता आ रहा है। इतने बड़े टूर्नामेंट का। आयोजन बलरामपुर के नगरवासियों को गौरवान्वित करती है। इसलिए ऐसे आयोजन को सफल बनाने के लिए हरसंभव सहयोग की अपील है। बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य व टूर्नामेंट के सचिव प्रोफेसर जे पी पाण्डेय ने सभी से आवश्यक सुझाव मांगते हुए कहा कि पिछले वर्ष की तर्ज पर इस वर्ष भी टूर्नामेंट के सभी मैच का सीधा प्रसारण कराया जाएगा। साथ ही दर्शकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए मैदान के दोनों ओर एलईडी स्क्रीन लगाये जायेंगे। आयोजन सचिव विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान डॉ राजीव रंजन ने बताया कि टूर्नामेंट के लिए आवश्यक तैयारियां लगभग पूर्ण कर ली गई हैं। टूर्नामेंट में उत्तर प्रदेश के बाहर से 10 टीमें प्रतिभाग करेंगी जिनकी सहमति भी मिलने लगी है। टूर्नामेंट की भव्यता को ध्यान में रखते हुए प्राइजमनी भी बढ़ा दिया गया है। इस बार टूर्नामेंट की विनर टीम को 75000 और रनर टीम को 51000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया जायेगा। टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष प्रतिनिधि शाबान अली, समाजसेवी डॉ प्रांजल त्रिपाठी, डॉ कुलदीप विश्वकर्मा, हसन कुरैशी, पूर्व आयोजन सचिव डॉ के के अंसारी, डॉ अरुण कुमार सिंह, आदि ने अपने अपने सुझाव दिये। इस अवसर पर मुख्य नियंता प्रो0 पी के सिंह, प्रो0 अरविंद द्विवेदी, प्रो0 मोहिउद्दीन अंसारी, प्रो0 एस पी मिश्र, डॉक्टर जे एश चौहान, डॉ एम पी तिवारी, केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष रघुनाथ अग्रवाल व महामंत्री अजय श्रीवास्तव, डॉ देवेश चंद्र,हारिस बिन खालिद, इकबाल फ्लावर, आयोजन सचिव आलोक शुक्ल, परीक्षा प्रभारी डॉ सद्गुरु प्रकाश, क्रीड़ाध्यक्ष डॉ अजहरुद्दीन, पुस्तकालय प्रभारी डॉ आशीष लाल,एन सी सी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ देवेन्द्र कुमार चौहान, विभागाध्यक्ष वाणिज्य डॉ एस के त्रिपाठी व डॉ अवनींद्र दीक्षित आदि मौजूद रहे।

पुरानी रंजिश को लेकर हुआ जिला पंचायत सदस्य पर हमला

सोहावल–अयोध्या। बीते दिनों चंद्रभान सिंह जिला पंचायत पर हुये हमले में अब उनकी स्थिति ठीक बतायी जा रही है। मीडिया में चल रही मनगढ़ंत खबरों को लेकर आज जिला पंचयात सदस्य के भाई सूर्यभान सिंह ने प्रेस करके मीडिया कर्मियों को अपने कागजात के साथ पूरे घटना क्रम से अवगत कराया।उनके भाई ने बताया कि इस जमीन से बिरोधियों को दूर दूर तक कोई वास्ता सरोकार नहीं है। केवल पुरानी रंजिश को लेकर घटना को अंजाम दिया।इस प्रेस में जिला पंचायत सदस्य की ओर से जमीन के बैनामा का कागजात प्रस्तुत करते हुये बताया कि इस जमीन को बाराबंकी की दो महिलाओं से अक्टूबर 2021 में बैनामा लिया है स खतौनी में खारिज दाखिल के लिये तहसीलदार के यहां पत्रावली दाखिल है। न्यायालय में हड़ताल आदि के कारण पत्रवली में अभी आदेश नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि केवल मीडिया की जानकारी के लिये इस प्रेस के माध्यम से बताया गया कि बैनामा की जमीन है । इसमें कहीं भी किसी प्रकार का विबाद नही है केवल पुरानी रंजिश जो 2014 में लखौरी गांव में एक महिला को जलाकर मार डालने की थी उसी में जनप्रतिनिधि होने के नाते गांव वालों के सहयोग से हमारे भाई ने पैरवी की थी जिसमें विपक्षी को उसमें सजा हुई इसी को लेकर इन लोगों ने हमारे भाई पर हमला किया था।

आर्य समाज बलरामपुर के तत्वाधान में डीएवी इंटर कॉलेज से निकली रैली

रैली निकालकर आत्मरक्षा कलाओं का किया प्रदर्शन

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। आर्य समाज की ओर से आयोजित सात दिवसीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के छठे दिन बुधवार को छात्र–छात्राओं ने रैली निकालकर आत्मरक्षा की कलाओं का प्रदर्शन किया। रैली डीएवी इंटर कॉलेज से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए पुनरू कॉलेज पर आकर समाप्त हुई। बच्चों ने रैली के दौरान जूडो कराटे सहित कई साहसिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। रैली शुभारंभ मुख्य अतिथि आर्य समाज प्रधान संजय तिवारी व विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ नेत्र सर्जन डा. कुलदीप विश्वकर्मा ने आर्य ध्वज दिखाकर किया। रैली डीएवी इंटर कॉलेज से प्रारम्भ होकर अम्बेडकर तिराहा, वीर विनय चौराहा, सराय फाटक,

चौक बाजार, मेजर चौराहा, काली माई थान से होते हुए पुनरू डीएवी इंटर कॉलेज परिसर में आकर समाप्त हुई। छात्रों की ओर से विभिन्न स्थानों पर जूडो कराटे, लाठी चलाना, पिरामिड निर्माण आदि का प्रदर्शन किया गया। मुख्य अतिथि तिवारी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों की प्रतिभा निखारने का मौका मिलता है। बच्चों ने जो सीखा है उसका निरंतर अभ्यास करते रहें जिससे प्रशिक्षण का लाभ उन्हें जीवन भर मिल सके। डा. कुलदीप विश्वकर्मा ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण छात्र–छात्राओं के जीवन का सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इस प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने वाले छात्र–छात्राओं को आत्म रक्षा के सम्बंध में बेहतर जानकारी मिली है। इस अवसर पर बाबा आनंद तिवारी, राजेश कुमार मिश्रा, आर्यवीर दल के जिला संचालक अरुण शुक्ला, सुशील आर्य, प्रशिक्षक देवव्रत आर्य, कुसुम आर्य, पायल आर्य, दिलीप श्रीवास्तव, सुरेन्द्र यादव, सोमा दत्ता, अर्चना श्रीवास्तव, वंदना पाण्डेय, दीप श्रीवास्तव, अवधेश पाण्डेय, शिव प्रसाद वर्मा, अरुण त्रिपाठी, सुधांशु दूबे, ऐश्वर्य मिश्रा, शिव जगत यादव सहित तमाम शिक्षक व शिक्षिकाएं मौजूद थे।

हिंदू महासभा के प्रदेश प्रभारी बने अजय सिन्हा

अयोध्या। हिंदुवादी नेता अजय सिन्हा को योगेंद्र वर्मा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अखिल भारत हिंदू महासभा ने उत्तर प्रदेश (आईटी सेल) प्रभारी का दायित्व सौंपा है। योगेंद्र वर्मा ने खुद अजय सिन्हा का इस पद के लिए मनोनयन किया। अजय सिन्हा को अखिल भारत हिंदू महासभा प्रदेश प्रभारी उत्तर प्रदेश चुने जाने पर उनके समर्थकों और हितैषियों के बीच खुशी का ठिकाना नहीं रहा कार्यकर्त्ताओं ने इस खुशी में एक दुसरे को गले मिल बधाई देने के साथ एक दुसरे को मिठाईयां भी खिलाई. साथ ही इस पद पर सुशोभित होने के लिए अपने प्रिय नेता अजय सिन्हा को भी बधाई और शुभकामनाएं दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। वहीं अपने समर्थको और कार्यकर्त्ताओं के प्रेम और उत्साह को देख अजय सिन्हा ने कहा कि वे आजीवन हिंदू रक्षा एवं विकास के लिए कार्य करेंगे. उन्होंने कहा कि वे कभी हिंदू संस्कृति को मिटने नहीं देगें उसे सदैव बरकार रखने के लिए तत्पर रहेगें. उन्होंने कहा कि वह हिंदुत्व के समाज मे हिंदू संस्कृति के बरकरार के हिंदू समाज को संगठित करेंगे. उन्होंने अधर्म का जड़ से नाश करने की बाते कहते हुए कहा कि वे कहीं भी अधर्म का काम नहीं होने देगें और ना ही हिंदू और हिंदुत्व की छवि को दागदार होने देगें। अजय सिन्हा ने कहा कि संगठन को प्रदेश से लेकर गांव तक मजबूत करेंगे.साथ हीं उन्होंने हर दल और हर जाति के हिन्दुओं का अहवाह्न करते हुए कहा कि चाहे आप जिस दल में हो आप हमारे संगठन में जुड़ सकते हैं। इस मौके पर अजय सिन्हा के समर्थकों ने राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष योगेंद्र वर्मा को धन्यवाद देते हुए राजेश कौशल वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अरुण चौधरी प्रदेश अध्यक्ष और अभिनव अग्रवाल राष्ट्रीय महामंत्री व हिंदू महासभा जिंदाबाद के नारे भी लगायें।

शोहरतगढ़ में 9.5 करोड़ की लागत से बनी विभिन्न परियोजनाओं का सांसद ने किया लोकार्पण

- **बतौर मुख्य अतिथि डुमरियागंज सांसद जगदंबिका पाल ने साढ़े नौ करोड़ रुपए की लागत से विभिन्न परियोजनाओं का किया लोकार्पण**
- **शोहरतगढ़ की शोहरत को बुलंदियों पर ले जाने के लिए धन की कमी नहीं आने दी जाएगी- सांसद पाल**

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। स्थानीय सरस्वती विद्या मंदिर प्रांगण में बतौर मुख्य अतिथि डुमरियागंज सांसद जगदंबिका पाल ने साढ़े नौ करोड़ रूपए की लागत से विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण किया। कार्यक्रम से पूर्व सांसद पाल ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया। विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत गाकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। नगर में साढ़े नौ करोड़ रूपए की लागत से किये गये विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण किया। सांसद ने कहा कि विश्वगुरु के रूप में पहचान बनाने वाले यशश्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व विकास पुरुष योगी आदित्यनाथ जी द्वारा देश व प्रदेश में बगैर भेदभाव व जाति–पाति के विभिन्न प्रकार के कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों लाभान्वित करने का कार्य किया जा रहा है। डिजिटल लेन देन में विश्व में भारत को पहला स्थान प्राप्त हुआ है। कहा कि माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का शोहरतगढ़ से बहुत ही गहरा नाता है। शोहरतगढ़ की शोहरत को बुलंदियों पर ले जाने के लिए धन की कमी नहीं आने दी जाएगी। नगर वासियों को लाभ पहुंचाने के लिए खुनुंवा बाईपास मार्ग के पूरब समय माता मंदिर तक दो करोड़ रूपए का इंटरलांकिग, 15 लाख रूपए का थाना के बगल इंटर लाकिंग, डोई बन बाबा समाधि स्थल सौंदर्यीकरण व एमआरएफ 55 लाख रूपए, नारायनपुर प्रावि बाउंड्री वाल 32 लाख रूपए, सरस्वती विद्या मंदिर में 55 लाख रुपए की लागत से सुभाष सभागार, प्याऊ 3 लाख, नगर के विभिन्न वार्डो में 48 लाख रूपए की लागत से 7 स्थलों पर वाटर कुलर आदि परियोजनाओं का लोकार्पण किया। अध्यक्ष बबिता कसौधन ने कहा कि शोहरतगढ़ का विस्तारीकरण हो चुका है जल्द ही नगरपालिका का दर्जा मिल जाएगा। कहा कि विकास के लिए हमारे स्वजनों ने कुर्बानी देकर शोहरतगढ की शोहरत को बकरार रखने का कार्य किया है। अध्यक्षता बबिता कसौधन व संचालन सौरभ गुप्ता ने किया। इस दौरान हनुमानगढ़ी महंथ बलराम दास, ब्लाक प्रमुख प्रीती यादव, प्रतिनिधि अमित यादव, राम मिलन त्रिपाठी, सांसद प्रतिनिधि सुर्यप्रकाश पांडेय, प्रधानाचार्य डा०नलिनी कांतमणि त्रिपाठी, प्रधान संघ जिलाध्यक्ष पवन मिश्रा, प्रधानाचार्य धर्मेंद्र मिश्रा, अजय सिंह बालमुकुंद वर्मा, कृष्णपाल चौधरी, राम विलास यादव, हेमंत उपाध्याय, शिवाकांत त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

किसान दिवस का आयोजन, फसल बीमा योजना के बारे में दी जानकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की उपस्थिति में डा0 अम्बेडकर सभागार में किसान दिवस का आयोजन किया गया। बैठक में सर्वप्रथम उपकृषि निदेशक द्वारा पिछली बैठक की कार्यवृत्त को पढ़ा गया, जिसमें अधिकांश शिकायतों का निस्तारण करा दिया गया है। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने किसान दिवस में उपस्थित किसानों की समस्याओं को सुना गया। जिला कृषि अधिकारी से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी तथा लाभार्थियों के खाते में धनराशि प्रेषित कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने जिला कृषि अधिकारी को निर्देश दिया कि किसानो को समय से खाद उपलब्ध कराये। ट्यूबेलध्नलकूपो को संचालन समय से हो। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता विद्युत को निर्देश दिया कि जो नलकूप विद्युत दोष के कारण बन्द है उन्हें तत्काल ठीक कराना सुनिश्चित करे। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि नहरो में पानी अन्तिम टेल तक पहुॅचाना सुनिश्चित करे। बैठक के दौरान डॉ एस0के0मिश्रा वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र सोहना रवी फसल प्रबंधन एवं जैविक खेती के बारे में विस्तार से कृषको को जानकारी दी। जिलाधिकारी ने मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया कि छुट्टा गोवंश को गौशाला में पहुॅचाये तथा फसल बुआई से पहले निर्माणाधीन गौशाला का निर्माण कार्य पूर्ण कराकर उसमें गौवंश को संरक्षित करने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने किसानो से अपील करते हुए कहा कि पराली न जलाये। पराली अधिक होने पर संबधित खंड विकास अधिकारी को सूचित करे। खंड विकास अधिकारी द्वारा पराली को इकट्ठा कराकर गौवंश हेतु रखा जायेगा। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने उप कृषि निदेशक को निर्देश दिया कि प्राप्त शिकायतों को संबधित अधिकारियों को प्रेषित करके उनकी शिकायतों का समयबद्ध निस्तारण कराये। जिलाधिकारी द्वारा किसानो की अन्य समस्याओ को सुना गया तथा उसके निस्तारण हेतु संबधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया। उपकृषि निदेशक अरविंद विश्वकर्मा द्वारा बैठक में आए हुए समस्त अधिकारीगण व सम्मानित कृषको को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त जिला खाद्य विपणन अधिकारी, जिला कृषि अधिकारी सी0पी0सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी एम0पी0सिंह, अधिशासी अभियन्ता सिंचाई निर्माण खण्ड आर0के0सिंह, अधिशासी अभियन्ता विद्युत सिद्धार्थनगर आर0के0कुशवाहा तथा किसान यूनियन के समस्त पदाधिकारी एवं किसान व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्य विकास अधिकारी ने किया दुल्हा दरम्यानी गौशाला का निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। मुख्य विकास अधिकारी महोदय द्वारा विकास

खण्ड–बर्डपुर के ग्राम पंचायत–बर्डपुर नं0–3, अमानगंज एवं ग्राम पंचायत–दुल्हा दरम्यानी में गौशाला का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय सुरेश कुमार, खण्ड विकास अधिकारी एवं ग्राम प्रधान आदि उपस्थित रहे। इन ग्राम पंचायतों में पूर्व से गौशाला निर्मित है। जो वर्तमान में बन्द है, जिसका पुनः संचालन किये जाने हेतु मरम्मत कार्य कराया जा रहा है। ग्राम पंचायत–बर्डपुर नं0–3, टोला अमानगंज में निर्मित गौशाला संचालन हेतु तैयार हो गयी है। ग्राम दुल्हा दरम्यानी में निर्माण का तीव्र गति से कराते हुए एक सप्ताह में गौशाला संचालित करने के निर्देश दिये गये।

108 पर कार्यरत स्वास्थ्य टीम का प्रशंसनीय कार्य ग्राम बसहीया

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर निवासी मनटू द्वारा 108 पर सूचना दी गई कि उनके घर पर रेहाना को प्रसव पीड़ा हो रही है। सूचना पाकर यूपी 32 ई जी 4560 इमरजेंसी मेडिकल टेक्निशियन प्रमोद कुमार व चालक अजीत कुमार के साथ तत्काल मौके पर पहुंचे। रास्ते में कबुलिहा चौराहे के पास ही प्रसूता को प्रसव पीड़ा गंभीर होने लगी, इस स्थिति में टेक्नीशियन प्रमोद कुमार एवं परिवारजनों की मदद से सुरक्षित प्रसव कराया, जच्चा बच्चा स्वस्थ पाकर परिजनों ने आभार व्यक्त किया तथा जिला प्रभारी अरविंद कुमार गौतम व प्रोग्राम मैनेजर प्रवीण दिवेदी द्वारा इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा की गई।

मुख्य विकास अधिकारी ने किया धान क्रय केन्द्र–क्षेत्रीय बर्डपुर, पी0सी0एफ का निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जयेन्द्र कुमार मुख्य विकास अधिकारी महोदय

द्वारा विकास खण्ड–बर्डपुर के धान क्रय केन्द्र–क्षेत्रीय बर्डपुर, पी0सी0एफ का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय केन्द्र खुला पाया गया एवं केन्द्र प्रभारी अमित कुमार शुक्ला उपस्थित रहे। केन्द्र प्रभारी द्वारा बताया गया कि अभी तक धान का क्रय नही किया गया, 03 कृषकों का आवेदन सत्यापित हो गया है, जिनके द्वारा शीध्र ही धान तौला लिया जायेगा। धान का समर्थन मूल्य की सूचना केन्द्र पर प्रर्दशित किया गया है। केन्द्र प्रभारी को निर्देशित किया गया कि अनावश्यक रूप से कृषकों को वापस न किया जाय। पंजीकरण एवं सत्यापन के उपरान्त कृषकों से तत्काल धान क्रय कर लिया जाय।

जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिला परामर्शदात्री समिति एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की उपस्थिति मे कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम पिछली बैठक की कार्यवाही पर चर्चा की गयी। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बताया कि आत्मनिर्भर भारत योजना के अन्तर्गत कामगारों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन योजना के अन्तर्गत त्रैमास सितम्बर 2022–23 तक का लक्ष्य 3698 के सापेक्ष पूर्ति 836 है एवं 3096 समूहों के सापेक्ष 760 समूहो को सी0सी0एल0 किया गया है। प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर योजनान्तर्गत मार्च 2022 तक का लक्ष्य 2306 के सापेक्ष 4162 की स्वीकृति एवं 3836 का विवरण विभिन्न बैंको के द्वारा किया गया है। किसान क्रेडिट कार्ड का भौतिक लक्ष्य नवीनीकरण हेतु 10128 एवं नया 67835 कुल भौतिक लक्ष्य 176963 के सापेक्ष बैंको से प्राप्त डाटा के अनुसार वित्तीय वर्ष 2022–23 में नवम्बर 2022 तक नवीनीकरण 81846 एवं नया 50877 कुल 132723 किसान क्रेडिट कार्ड निर्गत किये गये है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजनान्तर्गत त्रैमास सितम्बर वित्तीय वर्ष 2022–23 में प्राप्त कुल आवेदन पत्र 8320 के सापेक्ष 113.80 करोड़ स्वीकृत किया गया है जिसके सापेक्ष 108.93 करोड़ का ऋण वितरित किया गया है। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने वार्षिक ऋण योजना के अन्तर्गत फसली ऋण को स्वीकृत कर बढ़ाने का निर्देश दिया तथा सभी बैक अपने लक्ष्य को शत–प्रतिशत पूर्ण करे। सी.डी. रेसियों बढ़ाने तथा पात्र लाभार्थियों को विभिन्न योजनाओ के माध्यम से स्वीकृत करने का निर्देया दिया साथ ही यह भी निर्देश दिया कि पत्रावली लम्बित न रहे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने सभी बैंक शाखा प्रबन्धकों को निर्देश दिया कि किसानों व्यापारियों को किसी भी प्रकार से अनावश्यक रूप से परेशान न किया जाये उनकी समस्याओं का तत्काल निराकरण कराया जाना सुनिश्चित करे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बैको से ऋण–जमा अनुपात बढ़वाने का निर्देश दिया गया। एक जनपद एक उत्पाद, मुख्यमंत्री युवा स्वरोगार योजना के अन्तर्गत ऋण स्वीकृत करने का निर्देश दिया। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त अपर उपजिलाधिकारीध्परियोजना अधिकारी डूडा सन्त कुमार, पी0डी0 नागेन्द्र मोहन त्रिपाठी, डी.सी.एन.आर.एल.एम. योगेन्द्र लाल भारती, लीड बैंक अधिकारी, उपायुक्त उद्योग दयाशंकर सरोज, मुख्य प्रबन्धक भारतीय स्टेट बैंक, शाखा प्रबन्धक नौगढ़ तथा समस्त बैंको के शाखा प्रबन्ध आदि उपस्थित रहे।

सिर्फ कागजों में हो रहा कार्य,एक ही कार्य का दो बार हुआ भुगतान, अधिकारी मौन

पंकज चौबे/दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी

योजना में मजदूरों के काम की भले ही गारंटी ना हो। लेकिन पुराने कार्य के नाम बदलकर भुगतान जरूर करा लिया जा रहा है। बढ़नी ब्लाक के अर्री गांव में ग्राम पंचायत के अंतर्गत कराए गए काम में एक ऐसा ही मामला प्रकाश में आया है। जिसमे एक कार्य पर एक ही वित्तीय वर्ष में दो भुगतान करा लिया गया है। भुगतान के समय भी विभागीय स्तर पर इस धांधली को नहीं पकड़ा जा सका। वित्त के तहत ग्राम पंचायत, वर्ष 2021–22 में ग्राम पंचायत से बढ़नी ब्लाक के ग्राम पंचायत अर्री टोला कपसिहवा में प्राथमिक विद्यालय कपसिहवा में पथवे निर्माण कार्य के एवज में सचिव रविकांत यादव के द्वारा 19 अप्रैल 2021को वित्त से 148516 रुपए का भुगतान जिसका बाउचर नंबर 5 जीबिध्21–22 च्1 व 29 अप्रैल को 222571 रुपए जिसका बाउचर नंबर अबिध्2021ध्22ध्च्ब् 1 पर करा लिया गया है। लेकिन उक्त कार्य का नाम बदलकर प्राथमिक विद्यालय कपसिहवा के परिसर में इनटरलाकिंग निर्माण की मनरेगा से आईडी 3151004048ध्958486255823066275 बनाकर 202223 में दुबारा 28ध्05ध्2022 को 554000+टैक्स व मजदूरी का भुगतान का करवा लिया गया। अब यह सवाल उठना लाजिमी है कि एक कार्य पर दो बार कार्य कराए जाना दिखाकर भुगतान कैसे करा लिया गया।

सम्पादकीय

राहुल के कारण दक्षिण पहुंचे मोदी?

ऐसा माना जा रहा है कि अन्ना डीएमके के एक गुट के साथ तालमेल करके या उसके नेताओं को पार्टी में शामिल करा कर भाजपा तमिलनाडु में अपनी ताकत बढ़ाएगी। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को एक भी सीट नहीं मिल पाई थी लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा खाता खोलने की उम्मीद कर रही है। सो, संभव है ...

कांग्रेस पार्टी का मीडिया विभाग इन दिनों बेहद सक्रिय है। उसका एकमात्र काम कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा और राहुल गांधी को हाईलाइट करना है। कांग्रेस का मीडिया विभाग पार्टी के प्रवक्ताओं के लिए एजेंडा तय कर रहा है और सोशल मीडिया में भी एजेंडा सेट कर रहा है। भाजपा कोई भी पहल कर रही है तो उसका प्रचार हो रहा है कि राहुल गांधी की यात्रा की वजह से भाजपा ऐसा कर रही है। जब से यात्रा शुरू हुई है तब से ऐसा चल रहा है। संघ प्रमुख के मुस्लिम इमाम के पास जाने को भी यात्रा से जोड़ा गया तो हिमाचल प्रदेश के चुनाव में भाजपा की कथित मुश्किल को भी यात्रा का नतीजा बताया जा रहा है। जाहिर है ऐसा यात्रा को सफल बताने के लिए किया जा रहा है। इसी क्रम में कांग्रेस के मीडिया सेल ने प्रचार किया है कि राहुल गांधी जैसे ही दक्षिण भारत में यात्रा पूरी करके वहां से निकले हैं और महाराष्ट्र पहुंचे हैं वैसे ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दक्षिण भारत की यात्रा पर पहुंचे। प्रधानमंत्री मोदी की दो दिन में चार दक्षिणी राज्यों के दौरे को राहुल की यात्रा से बनी मजबूरी बताया जा रहा है। हालांकि यह बात पूरी तरह से सही नहीं है। निश्चित रूप से भाजपा में यह चिंता है कि दक्षिण भारत में राहुल की यात्रा से कांग्रेस मजबूत हो सकती है और उसका चुनावी फायदा भी मिल सकता है। पर इसके साथ ही भाजपा इस यात्रा के पहले से दक्षिण में अपने को मजबूत करने में लगी है क्योंकि उसे भी अपनी सीटें वहीं से बढने की उम्मीद है। भाजपा कम से कम दो दक्षिणी राज्यों कर्नाटक और तेलंगाना पर पहले से काफी फोकस किए हुए है। राहुल की यात्रा से पहले छह महीने में दो–तीन बार प्रधानमंत्री तेलंगाना गए और राहुल गांधी की यात्रा शुरू होने से दो महीने पहले भाजपा ने अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक हैदराबाद में की थी। राहुल की यात्रा के बीच में भी प्रधानमंत्री कर्नाटक गए थे, जहां उन्होंने बीए येदियुरप्पा को खास तरजीह देकर राज्य के लिंगायत मतदाताओं को मैसेज दिया था। सो, इन दो राज्यों को लेकर भाजपा पहले से बहुत मेहनत कर रही है। बाकी दो राज्यों– तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में जहां प्रधानमंत्री गए उनमें से तमिलनाडु को लेकर भाजपा को कुछ उम्मीद है। ध्यान रहे पिछले दिनों केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तमिल भाषा को महत्व देने की बात कही। उसके बाद प्रधानमंत्री का दौरा हुआ। ऐसा माना जा रहा है कि अन्ना डीएमके के एक गुट के साथ तालमेल करके या उसके नेताओं को पार्टी में शामिल करा कर भाजपा तमिलनाडु में अपनी ताकत बढ़ाएगी। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को एक भी सीट नहीं मिल पाई थी लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा खाता खोलने की उम्मीद कर रही है। सो, संभव है कि राहुल गांधी की यात्रा की वजह से भाजपा को लगा हो कि प्रधानमंत्री का दक्षिण दौरा होना चाहिए लेकिन सिर्फ यही कारण नहीं है। भाजपा कर्नाटक में सरकार और लोकसभा की 23 सीटें बचाने और तेलंगाना में सरकार बनाने के लिए काफी पहले से मेहनत कर रही है।

गुपचुप बदलता रास्ता?

ठोस धरातल पर देखें, तो भारत ऐसे कदम उठा रहा है, जो एकध्रुवीय दुनिया और वैश्विक कारोबार में डॉलर के वर्चस्व को कमजोर करते दिख रहे हैं। जबकि अब तक वह अपने इस रुख के बारे में भ्रम कायम रखने में सफल रहा है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपनी मास्को यात्रा के दौरान दो ऐसी बातें कहीं, जिनसे इस समय की वैश्विक खेमेबंदी में शामिल दोनों पक्षों को यह महसूस हो सकता है कि भारत उनके साथ है। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के साथ वार्ता के दौरान अपनी शुरुआती टिप्पणी में जयशंकर ने कहा कि लगातार अधिक बहुध्रुवीय होती जा रही दुनिया के बीच यह संवाद हो रहा है। जिस समय रूस और चीन खुल कर दुनिया पर अमेरिकी वर्चस्व को तोड़कर बहुध्रुवीय दुनिया बनाने के प्रयासों में जुटे हैं, यह बयान मास्को और बीजिंग में सराहा जाएगा। इसके बाद जयशंकर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह पुरानी टिप्पणी दोहरा दी कि यह युद्ध का समय नहीं है। पश्चिमी राजधानियों में इसकी व्याख्या इस रूप में की जाएगी कि मास्को जाकर भारतीय विदेश मंत्री ने यूक्रेन में युद्ध छेडने के लिए रूस की आलोचना की है। बहरहाल, ठोस धरातल पर देखें, तो भारत ऐसे कदम उठा रहा है, जो एकध्रुवीय दुनिया और वैश्विक कारोबार में डॉलर के वर्चस्व को कमजोर करते दिख रहे हैं। रूस के साथ रुपया–रुबल लेन–देन का सिस्टम पहले ही चालू हो चुका है। अब यह खबर उससे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है कि भारत ने यही सिस्टम श्रीलंका, मालदीव और कई अफ्रीकी देशों के साथ कारोबार में भी लागू करने का निर्णय पिछले जुलाई में लिया था। इस रूप में भारत डॉलर का वर्चस्व करने की कोशिशों में एक सक्रिय भागीदार बनता दिख रहा है। जब ब्रिक्स के मंच पर आपसी कारोबार का नया मुद्रा बास्केट अमल में लाने पर गंभीर विचार–विमर्श हो रहा है और ब्रिक्स में शामिल होने के लिए अर्जी देने वाले देशों की संख्या बढ़ती जा रही है, तब डॉलर से अपने कारोबार को हटाना एक दूरगामी महत्त्व का फैसला बन जाता है। ब्रिक्स में अगर ये सहमति बन गई, तो देर–सबेर चीन के साथ भी भारत का कारोबार अलग मुद्रा में हो सकता है। उसका और भी ज्यादा दूरगामी परिणाम होगा। गौरतलब यह है कि भारत ने अपनी ये भूमिका गुपचुप बनाई है। इस बीच ये गौरतलब है कि भारत के रुख के बारे में आम तौर पर भ्रम बना हुआ है।

रंग की राजनीति

धन और सत्ता की शक्ति से संपन्न वर्ग अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेज देते हैं या फिर देश में ही महंगे शिक्षा संस्थानों में उनकी डिग्रियों का इंतजाम होता है और पढ़ने के बाद बड़ी कंपनियों में नौकरियों का भी। मगर मध्यम और गरीब तबके के छात्रों को डिग्री और नौकरी के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है, फिर भी क्या मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं। जनता को रंगों की राजनीति में उलझाकर ...

कर्नाटक की भाजपा सरकार ने राज्य में विवेका योजना के तहत बनाए जा रही 7,500 से अधिक नई कक्षाओं को भगवा रंग में रंगने का फैसला लिया है। इसके अलावा सरकार ध्यान कक्षाएं लगाने की भी तैयारी में है। स्कूलों में गीता को पाठ्यक्रम में शामिल करने का फैसला तो कर्नाटक सरकार ने पहले ही ले लिया था। शिक्षा के क्षेत्र में एक के बाद एक किए जा रहे ये प्रयोग कट्टर हिंदुत्व की मानसिकता से उपजे दिखाई दे रहे हैं। लेकिन इन्हें कभी संस्कृति, कभी आध्यात्म और कभी वास्तुकारों के सुझावों का नाम दिया जा रहा है। जी हां, कक्षाओं को भगवा रंग में रंगने का फैसला शिक्षा मंत्री बी सी नागेश के मुताबिक वास्तुकारों की सलाह पर लिया गया है और यह किसी विचारधारा से संबंधित नहीं है। जबकि कांग्रेस ने कक्षाओं पर भगवा रंग चढ़ाने का विरोध किया तो मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा कि ऐसे मुद्दों पर राजनीति करना ठीक नहीं है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज में भगवा रंग होता है। भगवा रंग देखकर कांग्रेसी इतने दुखी क्यों हैं? उन्होंने कहा कि हम कक्षाओं का निर्माण कर रहे हैं और उन्हें स्वामी विवेकानंद को समर्पित कर रहे हैं जो भगवा वस्त्र पहनने वाले संत थे। ऐसे में गलत क्या है? ऐसे मासूम तर्कों की आड़ में, स्वामी विवेकानंद के सहारे भाजपा किस तरह शिक्षा का भगवाकरण करने में लगी है, यह समझना कठिन नहीं है। वैसे इस साल मार्च में तत्कालीन उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई शांति एवं सुलह संस्थान का उद्घाटन करते हुए मैकाले द्वारा बनाई गई शिक्षा प्रणाली को खारिज करने का आह्वान किया था। तब श्री नायडू ने कहा था कि शिक्षा प्रणाली का भारतीयकरण भारत की नई शिक्षा नीति का केंद्र है, जो मातृ भाषाओं को बढ़ावा देने पर बहुत जोर देती है। इसके साथ ही उन्होंने पूछा था, श्हम पर शिक्षा का भगवाकरण करने का आरोप है, लेकिन भगवा में गलत क्या है?श पूर्व भाजपा नेता और उपराष्ट्रपति का सवाल और अब कर्नाटक के मुख्यमंत्री का सवाल लगभग एक जैसा ही है। और इनका जवाब यही है कि रंग कोई भी खराब नहीं होता, लेकिन किसी रंग को बढ़ावा देने के पीछे जो विचारधारा काम कर रही है, जिस नीयत से एक खास रंग को बढ़ावा दिया जा रहा है, उस पर सवाल उठाए जा रहे हैं। वैसे तो काले रंग में भी कोई बुराई नहीं है। फिर भी प्रधानमंत्री की कई सभाओं में काले रंग के कपड़े, टोपी, बाजू की पट्टी सब पर प्रतिबंध क्यों होता है। क्या भाजपा इस सवाल का जवाब देगी कि उसे काले रंग से क्या परेशानी है। यह अच्छी बात है कि स्वामी विवेकानंद को समर्पित विवेका योजना में नई कक्षाओं का निर्माण हो रहा है। स्वामी जी खुद महान शिक्षाविद थे। वे भले भगवा वस्त्र पहनते थे, लेकिन धर्म की कट्टरता से वे कोसों दूर थे। उनके विचारों को टुकड़ों में प्रस्तुत कर उन्हें बार–बार हिंदुत्व तक सीमित करने की कोशिश की जाती है। जैसे गांधीजी को केवल स्वच्छता अभियान तक सीमित कर दिया गया या सरदार पटेल को केवल भारतीय रियासतों के विलय तक या सुभाषचंद्र बोस को अंग्रेजों के मुकाबले आजाद हिंद फौज खड़ी करने तक। लेकिन इन महान व्यक्तियों के कार्य और विचार का दायरा यहीं तक नहीं रहा, बल्कि ये सब बेहद उदार और व्यापक दृष्टिकोण रखते थे, जो सही मायनों में भारतीय दर्शन के अनुकूल है। अगर इनके विचारों में कट्टरता होती तो भारत के इतिहास में इनका नाम अमर नहीं होता। स्वामी विवेकानंद ऐसी शिक्षा के हिमायती थे, जिससे चारित्रिक, बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक हर तरह का विकास हो। शिक्षा उनके लिए अपने भीतर पैठे ज्ञान को खोजने का साधन थी। अपनी मौजूदा शिक्षा व्यवस्था को हमें इसी कसौटी पर परखना चाहिए। शिक्षा के नाम पर तरह–तरह के प्रयोग बरसों से किए जा रहे हैं। अगर उनसे विद्यार्थियों की बेहतरी के रास्ते खुलते हैं, तो इन प्रयोगों को जारी रखना चाहिए। मगर शिक्षा को राजनीति का मैदान बनाकर बच्चों को प्यादों की तरह इस्तेमाल करना अपने ही भविष्य को कुएं में धकेलने जैसा है। इसी कर्नाटक में हिजाब विवाद इस आधार पर खड़ा हुआ था कि शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक प्रतीकों का दखल नहीं होना चाहिए। अब अपनी ही राय के विपरीत सरकार कक्षाओं को भगवा रंग में रंग रही है। कुछ समय पहले उत्तरप्रदेश में इसी तरह कई इमारतों पर भगवा रंग चढ़ा दिया गया था। मूर्ति की राजनीति के बाद, प्रमुख स्थानों, शहरों, सड़कों के नाम बदलने का सिलसिला चल पड़ा और अब रंग से राजनैतिक मकसद साधे जा रहे हैं। इस सिलसिले पर रोक लगनी चाहिए। सरकारें ऐसे फैसलों को अदालत में सही साबित कर भी देंगी, तब भी जनता को अपने विवेक से फैसला लेना चाहिए कि भावनाओं की ऐसी राजनीति में उसे क्या हासिल हो रहा है। कर्नाटक समेत देश के तमाम राज्यों में सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने पर बात होनी चाहिए। सरकारों से पूछा जाना चाहिए कि स्कूलों में बच्चों के लिए वैसी सुविधाएं क्यों नहीं हैं, जैसे संपन्न तबकों के बच्चों, अधिकारियों और नेताओं के बच्चों को उनके स्कूलों में मिलती हैं। धन और सत्ता की शक्ति से संपन्न वर्ग अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेज देते हैं या फिर देश में ही महंगे शिक्षा संस्थानों में उनकी डिग्रियों का इंतजाम होता है और पढ़ने के बाद बड़ी कंपनियों में नौकरियों का भी। मगर मध्यम और गरीब तबके के छात्रों को डिग्री और नौकरी के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है, फिर भी क्या मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं। जनता को रंगों की राजनीति में उलझाकर असली मुद्दों से उसका ध्यान भटकाया जा रहा है। इसलिए जनता को ही सतर्क रहना होगा कि वह सरकार से अपने हक का हिसाब मांगे और अपना ध्यान भटकने न दे।

भारतीय संघवाद के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर चिंतन एवं विद्वानों का दृष्टिकोण

जिसमें भारतीय संविधान और सांविधिक आयामों का भी संकलन किया गया जैसे –भारतीय संघवाद का प्रावधान संविधान में नहीं है । सहकारी संघवाद के विकसित स्वरूप की चर्चा । विभिन्न परिषदों और आयोगों की भी चर्चा हुयी । 2014 के बाद सहकारी संघवाद का स्वरूप अत्यंत विकसित हुआ जिसमें यह प्रावधान किया गया की कमजोर राज्यों को भी प्रगति का अवसर दिया गया...

विकास कुमार

भारतीय शिक्षण में कला–कौशल के विकास का निर्णीत आधार वाद–विवाद के अनुक्रम से विकसित होकर नए चिंतन में नवाचार शैली को सन्निहित करते हुए वैचारिकी की गतिशीलता में चेतना का संचार करता था । परंतु कहने का आशय यह नहीं है की मुकम्मल भारत की ज्ञान शैली का संरचनात्मक और चेतनशील प्रगति का अनुप्रायोगिक प्रवाह–प्रसार इसी समायोग तथा संभरण पर निर्भर था । यह एक विचारों के अन्वेषण,अन्वीक्षण तथा शोध के विकसित स्वरूप और ज्ञान के नए मार्गों को उदीयमान करनें में सहयोगी एवं सार्थक होती थी । वर्तमान में बौद्धिक जगत में इसके स्वरूप का विन्यास संगोष्ठियों और सेमिनारों ने ले लिया। समूचे विश्व में किसी विषय पर विद्वानों के विचार,समकालीन अवधारणा तथा उस विषय की भविष्योन्मुखी प्रासंगिकता के स्वरूप को समझने के लिए संगोष्ठी बेहतर समायोजन होता है,परंतु उसका स्वरूप अकादमिक होना चाहिए जिसमें विचारों का प्रवाह विषयांतर न हो और नए तर्कों के साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण को सरोकार करते हुए अपने चयनित विषय का चिंतन प्रस्तुत करना चाहिए । ऐसे बौद्धिकत से सम्पन्न विचार विमर्श बहुत काम संगोष्ठियों में होता है ,परंतु कुछ ऐसे संस्थान और विश्वविद्यालय है जो ऐसे कार्यक्रमों में विचार–विमर्श के अकादमिक स्वरूप को अपनाते हुए कार्यक्रम को सम्पन्न करते हैं । ऐसा ही एक कार्यक्रम मध्य–प्रदेश समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रारंभ से लेकर अवसान तक बौद्धिक अनुशीलन होता रहा । यह कार्यक्रम 10–11 नवंबर को संस्थान के निर्देशक प्रोफेसर यतीन्द्र सिंह सिसोदिया के संयोजन में तथा उदय सिंह राजपूत (सहायक प्रायाध्यक,अमरकंटक विश्वविद्यालय) और पुष्पेंद्र मिश्र के समन्वयन में सम्पन्न हुआ था । इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में निर्देशक से परिचित एवं संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर गोपाल शर्मा ने कहा कि यहाँ अकादमिक विमर्श और चिंतन में नवाचार की भावना को प्रोफेसर यतीन्द्र सिंह सिसोदिया बहुत ध्यान रखते हैं जो समापन सत्र तक दिखी । इस समीक्षा में केवल कुछ ही विद्वानों के दृष्टिकोण को संकलित किया जा सकता है जो भारतीय संघवाद के समकालीन स्वरूप को समझने में परिणामकारी सिद्ध होंगे । उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रोफेसर रेखा सक्सेना (प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग) जिन्होंने विभिन्न देशों में सम्पन्न संगोष्ठियों में संघवाद से संबंधित विषयों पर शोध पत्र का वचन किया है और संघवाद विषय के विभिन्न आयामों को लेकर शोध पत्र, आर्टिकल और पुस्तकें भी लिखी हैं जिनका इस विषय पर वृहद और व्यापक अनुभव है । उनके चिंतन के अनुशीलन से केवल भारतीय संघवाद का स्वरूप ही नहीं प्रभावित हुआ बल्कि विश्व के कई देशों ने उनके विचारों से अपने संघीय संरचना में परिवर्तन भी किया है । नेपाल के संविधान में संघात्मक स्वरूप के ढांचे को निर्मित करनें में उनके विचारों का योगदान रहा है । किसी देश काल की परिस्थितियों के आधार पर ही संघवाद की संरचना निर्धारित होनी चाहिए । भारतीय संघवाद का आधार केवल शक्तियों के विभाजन पर नहीं टिका है इसके स्वरूप और गतिशीलता के अनुभावजन्य प्रमाणित आयाम यह निर्देशित करते हैं की यह राज्यों और केंद्रों के मध्य सहकार की भावना को उत्प्रेरित करता है । ऐसे विमर्श के पश्चात प्रोफेसर यतीन्द्र के विचारों को समावेत करना आवश्यक है जिनका चिंतन आलोचनात्मक था कुछ ही शब्दों में संघवाद के घटित,विघटित,प्रचलित और सुचरित सभी प्रकार के विचारों का समावेश किया । संघवाद का भारतीय स्वरूप और उसके सम्पूर्ण मानकों की विश्लेषणात्मक व्याख्या उनके विचारों का सार और प्रवाह रहा । विषय के इसी संदर्भ में प्रोफेसर गोपाल शर्मा के विचार वर्तमान विकसित होते अनुक्रमों का समायोजन करते हुए । ऐतिहासिक मापदंडों के अनुसार,भारतीय संघवाद की व्याख्या को अनुप्रायोगिक वैचारिकी से जोड़कर विश्लेषित किया । भारतीय संघवाद के मानक,मापदंड और भविष्य के मार्ग इन सभी व्याख्यानों से स्पष्ट हो गए थे ,जिनके द्वारा संदर्भित प्रतिमानों नें नए आयाम को विकसित किए । यही विमर्श का समायोजन विषय के पहलुओं को समझने में और समकालीन चिंतन के प्रतिरूप को प्रतिरूपित किया । इस संगोष्ठी में विषय के उप–विषय के आधार पर तकनीकी सत्र विभाजित थे जिसमें प्रथम तकनीकी सत्र की शुरुवात अध्यक्षीय उदबोधन के पश्चात प्रोफेसर सरोज कुमार वर्मा जी के शोध पत्र से हुआ जिनके शोध पत्र का शीर्षक था श्भारत में सहकारी संघवादरू मिथक एवं यथार्थ्य अपनी भूमिका में उन्होने कहा की संघवाद का आधार शक्तियों के विभाजन है साथ ही केंद्र–राज्य संबंधों को समन्वय और सामंजस्य बनकर अपनी नीतियों का संचालन करना चाहिए । यही वक्तव्य डॉ. बिभूति नें भी अपने विचारों में समावेश करते हुए विचारों में नवाचार को प्रतिपादित करते हुए 40 से अधिक भागों में संस्कृति ,सभ्यता और भौगोलिक आधार को प्रस्तुत करते हुए राज्यों को विभाजित करनें कि सिफारिश की । इन विचारकों के अतिरिक्त 36 से अधिक शोध पत्रों में समकालीन संदर्भ और संगोष्ठी से संबंधित उप–विषयों पर सार्थक चर्चा हुयी । जिसमें भारतीय संविधान और सांविधिक आयामों का भी संकलन किया गया जैसे –भारतीय संघवाद का प्रावधान संविधान में नहीं है । सहकारी संघवाद के विकसित स्वरूप की चर्चा । विभिन्न परिषदों और आयोगों की भी चर्चा हुयी । 2014 के बाद सहकारी संघवाद का स्वरूप अत्यंत विकसित हुआ जिसमें यह प्रावधान किया गया की कमजोर राज्यों को भी प्रगति का अवसर दिया गया । तृतीय विश्व के देशों ने इस अवधारणा को क्यों अपनाया? साथ ही प्रतिस्पर्धी संघवाद की रूपरेखा कि व्याख्या और संविधान के बुनियादी ढाँचे और योजनाओं की भी चर्चा को विचार–विमर्श का माध्यम बनाया गया । ऐसे सफल और प्रगतिशील संगोष्ठियों की भारत में अकादमिक उत्कर्ष के संयोजन होना अत्यंत आवश्यक है जिससे केवल राजनीतिक,अकादमिक और आर्थिक प्रतिमान ही विकसित नहीं होंगे अपितु मानवीय मूल्यों में उत्कृष्टता देखनें को मिलेगी, क्योंकि ऐसे शुद्ध विचार–विमर्श से समन्वय और सामंजस्य की भावना विकसित होती है जिससे अकादमिक जगत बौद्धिक बनता है और शोधार्थी पूर्वाग्रह को छोड़कर सही रह में शोध कार्य करते है ।

(लेखक–केन्द्रीय विश्वविद्यालय ,अमरकंटक में रिसर्च स्कॉलर हैं एवं राजनीति विज्ञान विषय में गोल्डमेडलिस्ट हैं)

घरों में सोलर रूफटाप पावर प्लान्ट की स्थापना पर सरकार देगी अनुदान–राना

सोलर प्लान्ट लगाने से बिजली का बिल होगा कम बिल में कमी आयेगी–आकांक्षा

हरदोई । मुख्य विकास अधिकारी आकांक्षा राना ने बताया है। कि उत्तर प्रदेश नवीन एंव नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) द्वारा जनपद में ग्रिड कनेक्टेड रूफटाप सोलर पावर प्लान्ट की स्थापना का क्रियान्वयन व्यापक स्तर पर किया जा रहा है, इस संयन्त्र की स्थापना से पारम्परिक विद्युत की खपत एंव निजी विद्युत बिल में कमी की जा सकती है।ग्रिड संयोजित रूफटाप सोलर पावर प्लान्ट संयन्त्र नेट मीटिरिंग प्रणाली पर आधारित होता है, संयन्त्र से उत्पादित ऊर्जा का उत्पादन दिन में पारम्परिक ऊर्जा के स्थान पर किया जा सकता है।तथा उत्पादित ऊर्जा उपयोग की गयी ऊर्जा से अधिक होने पर सरप्लस ऊर्जा को ग्रिड में फीड किया जा सकता है। एक किलोवाट के संयन्त्र से लगभग 04 किलोवाट की ऊर्जा प्रतिदिन उत्पादित होती है। संयन्त्र की स्थापना के लिए भवन की छत पर अनुमानतः 10 वर्गमीटर प्रति किलोवाट दक्षिण दिशा में छायामुक्त स्थल होना चाहिए।

उन्होंने बताया है कि इस योजना को बढ़ावा दिये जाने के उददेश्य से घरेलू क्षेत्र में भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा आकर्षक अनुदान दिया जा रहा है, रूफटाप सोलर पावर प्लान्ट की स्थापना हेतु भारत सरकार द्वारा 01 से 03 किलोवाट तक के संयन्त्र पर रू0 14588.00 एंव 03 से अधिक 10 किलोवाट तक के संयन्त्र पर रू0 7294.00 प्रति किलोवाट की दर से अनुदान अनुमन्य है, इसके अतिरिक्त रू0 15000.00 प्रति किलोवाट की दर से अधिकतम रू0 30000.00 राज्य अनुदान भी दिये जाने का प्राविधान है। नेशनल पोर्टल पर इम्पैनल्ड वेन्डर की सूची उपलब्ध है, जिसमें प्रत्येक वेन्डर द्वारा प्रति किलोवाट की दर प्रदर्शित की गयी है, जिसके आधार पर लाभार्थी द्वारा स्वंय वेन्डर का चयन कर संयन्त्र स्थापित कराया जा सकता है, उपभोक्ता द्वारा संयन्त्रों की स्थापना हेतु आवेदन नवीन एंव नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम0एन0आर०ई०). भारत सरकार द्वारा संचालित पोर्टल वसंततववजिवच.हवअ.पद पर किया जा सकता है। संयन्त्र की स्थापना के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी यूपीनेडा, के कार्यालय कक्ष संख्या–10, द्वितीय तल, विकास भवन हरदोई, नजदीकी अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड से किसी भी कार्य दिवस में अथवा उनके दूरभाष संख्या–9415609057 पर प्राप्त की जा सकती है।

नगरीय चुनाव को लेकर प्रत्याशियों ने तेज किए प्रचार अभियन

दैनिक बुद्ध का संदेश

बृजमनगंजध्महराजगंज। नगर पंचायत बृजमनगंज नगरीय चुनाव को लेकर शासन द्वारा नामांकन के बाद विलोपन की प्रक्रिया चल रही हैं दिनांक 18ध्11ध्2022 तक निर्वाचन आयोग द्वारा वोटर लिस्ट जारी किए जाने के बाद आरक्षण लिस्ट जारी कर दिया जायेगा। बृजमनगंज नगरीय क्षेत्र मे चुनाव लडने वाले अध्यक्ष प्रत्याशियों द्वारा लाउडस्पीकर, डीजे लगाकर गाडियों से दिन भर प्रचार वाहन दौडा रहे हैं। जहां तेज आवाज के कारण क्षेत्र के प्रत्याशियों को ब्यापारियों के नाराजगी का सामना भी करना पड रहा है। जैसे जैसे चुनाव के दिन नजदीक आ रहे हैं प्रत्याशियों की संख्या बढती जा रही हैं। नगर पंचायत अध्यक्ष के इस दौड़ में समाजसेवी विनोद जायसवाल जनता की पहली पसंद बनते दिखाई दे रहे हैं। वह जिस टोले पर जा रहे हैं अपने जीवन के बारे मे बताते हुए विनोद जायसवाल ने कह रहे हैं 22 वर्षों से राजनीति बिना भेदभाव के साथ कर रहा हूं क्षेत्र की गरीब जनता हमारी प्राथमिकता में है रामलीला पडाव ,रेलवे स्टेशन रोड पर अपने नीजी पैसे से पूर्व में राबिस डलवाने का कार्य किया।छट्ठ पूजा कराने के लिए के लिए पूर्व में

ठाकुर द्वारा पर सफाई कराने का कार्य,सात सात गरीब बेटियों की शादी कराने का काम,जनता के सहयोग से एक्सप्रेस ट्रेन ठहराव, समयमाता मंदिर का विवादित मामले को दूर कर जीर्णोद्धार सहित अनेक अपने संघर्षों को जनता के बीच बताकर वहां की जनता का दिल जीत रहे हैं। क्षेत्र की जनता विकास चाहती हैं क्षेत्र की जनता संघर्ष करनेवाला ब्यक्ति चाहती हैं ।इस नगरीय चुनाव मे दल के साथ ब्यक्ति का चेहरा बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यक्ष पद के दावेदारों मे नं 1 की श्रेणी में आगे बढते नजर आ रहे हैं विनोद जायसवाल। भगवानपुर, मुर्दहिया, नरायनपुर, चौनपुर, बसहवा, रत्तुपुर, सुखरामपुर, जहलीपुर, हरनामपुर, अवधनगर, आलमचक, आमाडीह, खानपुर, मनसबगढ, कलवारगढ, शेषपुर मे जनसंपर्क नुक्कड़ सभा के माध्यम से उन्होंने कहा कि चुनाव जीतने के बाद सुखरामपुर ढाला पर अंडर पासिंग का निर्माण के साथ वृद्धा आश्रम का निर्माण, बरात घर एवं गांव के गरीब बेरोजगार युवाओं को रोजगार दिलाने का काम के साथ आदर्श नगर पंचायत बनाना हमारी पहली प्राथमिकता में शामिल हैं। बताते चलें कि बृजमनगंज नगर पंचायत में वर्तमान वोटरों की कुछ संख्या लगभग 14000 हैं। जिसमें अध्यक्ष के चार प्रत्याशी पूर्व प्रधान रहे हैं। दो प्रत्याशी प्रधान प्रतिनिधि रहे हैं एक प्रत्याशी पूर्व बीबीसी रहे हैं। शेष प्रत्याशी पहली बार राजनीति में अपना भाग्य आजमाने की कोशिश कर रहे हैं। किसके सर पर होगा नगर पंचायत अध्यक्ष का ताज यह तो आने वाला नगरीय चुनाव निर्धारित करेगा।

फैक्ट्री मैनेजर की संदिग्ध हालात में मौत

जौनपुर । जलालपुर थाना क्षेत्र के लहंगपुर गांव के निवासी एक प्लाई फैक्ट्री के मैनेजर अधेड़ लाल मोहन की संदिग्ध हालात में हुई मौत पुलिस के लिए सिर दर्द बन गई है। लालमोहन की हत्या हुई है या एक्सीडेंट इस बात को लेकर पुलिस पूरी तरह से उलझ चुकी है। अब पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा। मूल रुप से देवरिया जिले भेड़ी, बकरुवा क्षेत्र के निवासी लालमोहन जलालपुर के मकरा त्रिलोचन मे स्थित रामाप्लाई लि० फैक्ट्री मे बतौर मैनेजर कार्य करते थे। रात करीब 9 बजे परिजनों को सूचना मिली कि लालमोहन लहंगपुर गौशाला के पास सड़क पर गंभीर रूप से घायल पड़े हुए है। परिजन तत्काल उन्हें लेकर हॉस्पिटल पर गए डॉक्टर ने उन्हें उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजन शव को लेकर घर पर और सुबह पुलिस को सूचना दिया तो पुलिस घर पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना घर से करीब 400 मीटर दूर पर हुई है। घटनास्थल से खून से लथपथ लोहे की रॉड और एक ठंडा बरामद हुआ है। आशंका यह भी जताई जा रही है कि लालमोहन को पीट–पीटकर मौत के घाट उतारा गया है। लालमोहन के सिर पर गंभीर चोट के निशान थे और दोनो पैर भी पूरी तरह से टूटे हुए थे। मृतक के बहूँ पूजा ने बताया कि रोज की तरह सुबह करीब 7 बजे वह अपनी बाईक से फैक्ट्री ड्यूटी पर गये थे और करीब 8बजे रात को वह वापस घर आते थे।परिजनों के मुताबिक मृतक की बड़ी मोबाईल,सोने की चेन,पर्श आदि गायब है जिससे लूट की भी आशंका जताई जा रही है।

जगदीश पहलवान का कुश्ती संघ ने किया स्वागत

जौनपुर । गोरखपुर में आयोजित सीनियर राज्य स्तरीय कुश्ती चौपयनशिप में जिले के जगदीश प्रसाद ने 60 किलो भार वर्ग में स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। स्वर्ण पदक प्राप्त कर जनपद में प्रथम आगमन पर जगदीश पहलवान का कुश्ती संघ के संरक्षक डॉक्टर ब्रजेश कुमार यदुवंशी के नेतृत्व में स्वागत किया गया। इस अवसर पर डॉ0 यदुवंशी ने कहा कि जगदीश पहलवान बचपन से ही कुश्ती कला में पारंगत रहे हैं। जगदीश ने अब तक राष्ट्रीय स्तर पर आधा दर्जन से अधिक गोल्ड मेडल प्राप्त किये हैं। विदित हो कि इनकी पहलवानी का ही परिणाम रहा कि डीजल रेल कारखाना (डीएलडब्ल्यू) वाराणसी ने इन्हें कुश्ती के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रदर्शन के लिए स्पोर्ट्स कोटे से नौकरी दिया।

ऑल इंडिया चौंपियनशिप जो कि विशाखापट्टनम में आयोजित है उसमें भी जगदीश पहलवान उत्तर प्रदेश की तरफ से अपनी कुश्ती कला का जौहर दिखाएंगे। अपने स्वागत समारोह में जगदीश पहलवान ने कहा कि जनपद जौनपुर की पहलवानी पहले से ही आगे रही है और वर्तमान में भी जौनपुर के पहलवान अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। इन पहलवानों को अच्छे निर्देशन व मार्गदर्शन की सख्त जरूरत है जिससे युवा पहलवान राष्ट्रीय स्तर पर जनपद जौनपुर का नाम रोशन कर सकें। स्वागत समारोह में भरत यादव, सुजीत विश्वकर्मा,प्रदीप चुलबुल, अभिषेक यादव, अजित यादव,शनि मौर्य, अरविन्द यादव उपस्थित रहे।

गुण्डा टैक्स के लिए प्रधान दम्पत्ति को पीटा

जौनपुर । मड़ियाहूं तहसील के रामपुर थाना क्षेत्र के कुंभापुर गांव की महिला प्रधान श्रीमती जड़ावती देवी और उसके पति सुभाषचन्द प्रजापति को इण्टर लाकिंग सड़क बनवाते समय गुण्डा टैक्स वसूलने के लिए दबंगों ने पीट दिया और षिकायत करने पर थानास्तर से कार्यवाही न किये जाने पर पीड़ित दम्पत्ति ने पुलिस अधीक्षक से गुहार लगायी। ग्राम प्रधान ने पुलिस अधीक्षक को बताया कि उनके द्वारा गांव में इण्टर लाकिंग कराया जा रहा था कि ललित पाठक पुत्र राजनाथ, विजय पटेल पुत्र राजनाथ पटेल, दुर्गेष पाठक , काषी नाथ तिवारी, सन्त लाल आदि ने काम रोक दिया विरोध करने पर मारा पीटा और गालियां दी। उनका कहना था कि गांव के विकास के लिए जो धन आता है उसमें से 40 प्रतिषत रंगदारी नहीं दिया तो कोई काम नहीं करने दूंगा। इससे पहले भी कई बार खेल के मैदान में रखे गये तोड़ दिया। सभी मामलों की जानकारी थाने को दी गयी लेकिन कार्यवाही न किये जाने से दबंगो का मनोबल बढ़ा हुआ है। इन लोगों के खिलाफ कार्यवाही करें जिससे गांव का विकास हो सके।

मनरेगा के धन के लिए वनवासी को पीटकर अधमरा किया

जौनपुर । केराकत कोतवाली के पूरनपुर गांव के एक वनवासी मजदूर को मनरेगा के रूपये को लेकर ग्राम प्रधान ने बुरी तरह से पीटकर अधमरा कर दिया इससे उसका षरीर नीला जगह जगह नीला हो गया। कलेक्ट्रेट में जिला कार्यालय के आस पास वह घण्टो कपड़ा उतार कर अपनेषरीर के निषान को दिखाता रहा लेकिन उसकी पीड़ा सुनन वाला और आवेदन लेने वाला कोई नहीं दिखाई दिया। पूरनपुर गांव निवासी पिण्टू मुसहर ने बताया कि बीते 11 नवमबर की रात रात में ग्राम प्रधान दोजई यादव, षिव जनम, राम जनम, सुनील यादव पहुंचे और मनरेगा का खाते में आया पूरा पैसा मांगने लगे। उसने कहा कि जितना काम किया है उसका हिसाब कर लो। यह सुनकर सभी लोग उसे जबरन घर से एक किलो मीटर दूर मन्दिर पर ले जाकर हाथ पैर बांध दिया और तथा साइकिल के चौन, लाठियों से पीटकर लहूंलुहान कर दिया। दूसरे दिन केराकत थाने पर गया और पूर वाकया लेकिन कोई कार्यवाही नहीं की गयी। जब मेडिकल कराने को कहा तो पुलिस ने वहां से भगा दिया। उसने गुहार लगायी कि प्रकरण की जांच कर उसके साथ जुल्म करने वालों के खिलॉफ मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जाय।

हमला बोलकर चार बकरी उठा ले गयें चोर

जौनपुर । जिले के जलालपुर थाना क्षेत्र के सैदपुर गांव में घुसकर करीब आध दर्जन हौसला बुलंद बदमाशों ने एक परिवार पर हमला बोलकर खूंटे से बंधी तीन बकरियां और एक बकरा उठा ले गए। बदमाश बोलेरो गाड़ी से आए हुए थे जब तक ग्रामीण उनका पीछा करते तब तक वह बहुत दूर निकल चुके थे। मामला रात का बताया जा रहा है। परिजनों का आरोप है कि तहरीर देने के बाद भी पुलिस बदमाशों के विरुद्ध मुकदमा नही दर्ज कर रही है उल्टे हमी लोग को थाने से डांट फटकारा जा रहा है।अब्दुल ने बताया कि रात करीब एक बजे बदमाश घर पर आए और खूंटे से बंधी बकरियों का रस्सी काटने लगे खटपट की आवाज सुनकर हम लोग घर से बाहर निकले और शोर मचाना शुरू किया तो वह लोग हम पर पथराव कर दिए एक पत्थर मेरी दादी हसबुन लग गई जिससे वह घायल हो गई। बदमाशों के तरफ से लगातार पत्थर चलाया जा रहा था और बकरियों को एक के बाद एक बोलेरो गाड़ी में भरा जा रहा था।किसी तरह हम लोगों ने अपनी जान बचाई। घटना के बाद ही हम लोगों ने पुलिस को सूचना दिया परंतु आज तक मुकदमा नहीं दर्ज हुआ।

कहीं फीका ना पड़ जाए कपिलवस्तु महोत्सव, जिले में दो बार आयोजित होगा महोत्सव

बुद्ध पूर्णिमा पर मई में कपिलवस्तु में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर का महोत्सव कराने की योजना

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जनपद के एक मात्र महोत्सव इस बार कही फीका ना पड़ जाए इस बार जिले में एक साल में दो बार महोत्सव के आयोजन की संभावना बढ़ गई है। कपिलवस्तु महोत्सव को बड़ा आकार देने की तैयारी है, जबकि जिला मुख्यालय पर आयोजित होने वाले कपिलवस्तु महोत्सव का नाम बदलकर सिद्धार्थनगर महोत्सव हो सकता है। तथागत बौद्ध की क्रीड़ास्थली कपिलवस्तु में अंतरराष्ट्रीय स्तर का कपिलवस्तु महोत्सव कराने की योजना है। जिला प्रशासन ने दोनों महोत्सव के आयोजन की तैयारी शुरू कर दी है अभी तो कपिलवस्तु महोत्सव बीएसए ग्राउंड में 29 नवंबर से दो दिसंबर तक कपिलवस्तु महोत्सव की तैयारी का आयोजन होगा। कपिलवस्तु महोत्सव समिति के नोडल अधिकारियों ने बैठकें तेज कर दी हैं। कार्यक्रम की अंतिम रूपरेखा तैयार की जा रही है। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने कहा कि कपिलवस्तु महोत्सव–2022 के कार्यक्रमों में स्थानीय कलाकारों को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देकर कार्यक्रम में स्थान दिया जाएगा। जिले के दूर स्थलों यथा– डुमरियागंज, बढ़नी, इटवा, बांसी, तथा कपिलवस्तु बार्डर व लोटन आदि स्थानों से कपिलवस्तु महोत्सव का कार्यक्रम देखने आने वाले लोगों को लाने–ले जाने के लिए बस की सुविधा दी जाएगी। खेल व सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। महोत्सव के आयोजन की योजना है। इस महोत्सव के माध्यम से देसी–विदेशी पर्यटकों को आमंत्रित महोत्सव की तैयारी है। बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर मई में आयोजित हो सकता है महोत्सव करने व लुभाने की योजना है, जबकि हॉट बाजार विकसित करने एवं विपश्यना केंद्र की सुविधा भी मुहैया कराने की योजना है। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बताया कि कपिलवस्तु का स्वरूप बदलने की तैयारी हो गई है। प्रमुख सचिव पर्यटन मुकेश मेश्राम से चर्चा हुई है। बुद्ध पूर्णिमा पर कपिलवस्तु में अंतरराष्ट्रीय कपिलवस्तु महोत्सव का आयोजन हो सकता है।

तिलक इंटरमीडिएट कॉलेज बांसी में छात्र एवं छात्राओं को यातायात के नियमों बारे में बताया गया

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रोटरी क्लब सिद्धार्थनगर एवं पुलिस प्रशासन सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वाधान में हुये इस कार्यक्रम में पुलिस क्षेत्राधिकारी देवी गुलाम सिंह ने बच्चों को यातायात के बारीक नियमों के बारे में बताया और सदैव उसको पालन करने तथा परिवार के अन्य सदस्यों को पालन करने हेतु प्रेरित करने की जानकारी दी, उन्होंने कहा कि यातायात नियमों की जानकारी होने के बावजूद भी बहुत से लोग इन नियमों पर अमल नहीं करते जिससे आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं, यदि दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का प्रयोग करें, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग करें, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग ना करें,तो हम दुर्घटना से बच सकते हैं। रोटरी क्लब के सचिव अरुण कुमार प्रजापति ने ट्रैफिक सिग्नल के बारे में विस्तृत

रूप से बताया साथ ही साथ उन्होंने कहा कि यदि हम यातायात के नियमों का पालन करेंगे तो खुद तो सुरक्षित रहेंगे ही रहेंगे साथ ही साथ परिवार वालों को विपरीत परिस्थितियों से बचा सकते हैं, विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ कृष्ण कुमार ने कहा कि यदि हम सतर्क और सचेत होकर वाहन चलाये तो बहुत हद तक दुर्घटना से बच और अन्य को बचा सकते हैं, शिक्षक हरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि नाबालिग हाथों तथा अप्रशिक्षितों के द्वारा सड़क पर वाहन चलाने के कारण भी तमाम प्रकार की दुर्घटनाएं हो रही है, इससे हम सभी लोगों को बचाव करना चाहिए, रोटरी क्लब के सचिव अरुण कुमार प्रजापति ने अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए उपस्थित छात्र छात्राओं को सड़कों पर नियम के अनुसार पैदल चलने व वाहन चलाने के लिए प्रेरित किया, नितेश पांडेय ने भी उपस्थित लोगों के प्रति आभार प्रकट किया,अमित त्रिपाठी ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आप अपने घर के सदस्यों को इन नियमों को बताने और समझाने का अवश्य करियेगा, कार्यक्रम का संचालन विकास पांडेय ने किया। इस दौरान लोकपति सिंह, कमलेश कुमार, जयराम यादव वकील अहमद खान शिव आश्रय मनोज कुमार सिंह, आवेग शर्मा, आसिफ अली, गोबिंद, ग्रीश चौधरी, अश्वनी कुमार, आदि उपस्थित रहे, तथा छात्र–छात्राओं में विकास द्विवेदी, आकाश कुमार, अनामिका मिश्रा, अनिकेत मिश्रा, शिवांगी मिश्रा, संजना, मीनू, ममता, रोशनी ने भी संबोधित किया।

लोकतंत्र के मूल्यों की सुरक्षा और उसे बहाल करने में मीडिया की भूमिका अहम: राजेश पाण्डेय

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर बुधवार को ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन डुमरियागंज कार्यालय पर तहसील अध्यक्ष राजेश पाण्डेय के अध्यक्षता में विचार गोष्ठी व कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें मौजूदा समय में पत्रकारिता की चुनौतियों पर चर्चा के साथ ही निष्पक्ष और निडर पत्रकारिता पर जोर दियाा गया। विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए ग्रामीण पत्रकार एसोशिएशन के जिलाध्यक्ष आलोक श्रीवास्तव व डुमरियागंज तहसील अध्यक्ष राजेश पाण्डेय ने कहा कि हर साल 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन देश में एक स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस की उपस्थिति का प्रतीक है। पदाधिकारियों ने कहा कि यह दिन प्रेस की स्वतंत्रता एवं जिम्मेदारियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य प्रेस की आजादी के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना है। साथ ही यह दिन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बनाए रखने और उसका सम्मान करने की प्रतिबद्धता की बात करता है। प्रेस की आजादी के महत्व के लिए दुनिया को आगाह करने वाला ये दिन बताता है कि लोकतंत्र के मूल्यों की सुरक्षा और उसे बहाल करने में मीडिया अहम भूमिका निभाता है। कार्यक्रम को मंडलीय मंत्री रविंद्र कुमार गुप्ता, महामंत्री अनिल द्विवेदी, संप्रेक्षक काजी रहमतुल्लाह, कनिष्ट उपाध्यक्ष इंतजार हैदर, पंकज उर्फ दीपू दूबे, वहीद अहमद आदि ने भी संबोधित किया। वहीं कविश्शायर राम प्रकाश गौतम व शिक्षक जेपी सिंह ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुत कर निर्भीक व निष्पक्ष पत्रकारिता पर जोर दिया।

■ राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस पर ग्रापए ने किया विचार गोष्ठी व कवि सम्मेलन का आयोजन
■ डुमरियागंज स्थित ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन कार्यालय पर तहसील अध्यक्ष राजेश पाण्डेय के अध्यक्षता में आयोजित हुआ कार्यक्रम

गड्ढामुक्त हो चुकी सड़कों पर डीएम ने बैठाई जांच

देवरिया। जिले की सड़कों को गड्ढा मुक्त करने की हकीकत की जांच एसडीएम करेंगे। जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने दोपहर में कलेक्ट्रेट सभागार में गड्ढामुक्ति अभियान की समीक्षा की। उन्होंने शासन द्वारा निर्धारित नई समयसीमा 30 नवंबर के भीतर समस्त चिह्नित मार्गों को गड्ढामुक्त करने का निर्देश दिया। समीक्षा बैठक में डीएम के सामने लोकनिर्माण विभाग द्वारा जिन सड़कों को गड्ढामुक्त किया जा चुका है, उनका ब्योरा रखा गया। जिलाधिकारी ने लोक निर्माण विभाग द्वारा गड्ढामुक्त की गई समस्त सड़कों की जांच संबंधित क्षेत्र के एसडीएम से कराए जाने का निर्देश दिए। इसमें पीडब्ल्यूडी प्रांतीय खंड के अधिशासी अभियंता ने बताया कि भीखमपुर–देवरिया– रुद्रपुर–करहकोल मार्ग (12 किमी पैचिंग), सिरसिया–प्रतापपुर–मैरवा मार्ग (2 किमी), भाटपार–भींगारी– भवानीछापर मार्ग (2.5 किमी पैचिंग), देवरिया पकड़ी मार्ग, बरखरी परसिया छितही सिंह मार्ग (3 किमी पैचिंग) सहित विभिन्न मार्गों को गड्ढामुक्त कर दिया गया है। इसी प्रकार निर्माण खंड द्वारा जिन सड़कों को गड्ढामुक्त कर दिया गया है, उनमें देवरिया–कसया मार्ग (6 किमी पैचिंग), भीखमपुर–देवरिया– रुद्रपुर– करकोल घाट(4 किमी पैचिंग), मुसैला–भागलपुर मार्ग (5 किमी पैचिंग), सलेमपुर बरेजी मार्ग (1.5 किमी), महदहा डोमवलिया मुजरी बुजुर्ग मार्ग (2 किमी) सहित विभिन्न सड़कें शामिल है। जिलाधिकारी ने रामजानकी मार्ग, सलेमपुर मैरवा सहित विभिन्न सड़कों पर किए जा रहे पैचिंग कार्य के प्रगति की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने जिला पंचायत, नगर पालिका देवरिया, मंडी परिषद की सड़कों के पैचिंग कार्य को 30 नवंबर की समयसीमा के भीतर पूर्ण करने का निर्देश दिया। बैठक में पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता आरके सिंह, अपर मुख्य अधिकारी ज्ञानधन सिंह, ईओ रोहित सिंह समेत विभिन्न अधिकारी मौजूद रहे।

भारतीय रेडियो पर नहीं हो पाएगा नेपाल का चुनाव प्रचार

सोनौली। नेपाल चुनाव आयोग ने भारत सरकार को चुनाव के दौरान भारतीय सीमा वाले क्षेत्रों में उम्मीदवारों द्वारा प्रचार बंद करने के लिए लिखा है। आयोग ने विदेश मंत्रालय के माध्यम से भारत सरकार को पत्र भेजकर यह व्यवस्था बनाने के लिए कहा है कि उम्मीदवारों और पार्टियों की प्रचार सामग्री स्थानीय एफएम से प्रसारित न हो। चुनावों के दौरान, भारतीय सीमावर्ती जिलों और निर्वाचन क्षेत्रों के उम्मीदवारों के लिए स्थानीय मीडिया में विज्ञापन देने की प्रथा रही है। चुनाव आयोग के उप सचिव कमल भट्टाराई ने कहा कि विदेशी मीडिया में चुनावी प्रचार पर रोक लगाने के लिए आचार संहिता बनाई गई है। चुनाव के दौरान आयोग ने विदेश मंत्रालय के जरिए भारत सरकार से यह सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है कि नेपाल की किसी भी पार्टी या उम्मीदवार की कोई प्रचार सामग्री प्रसारित न हो। रूपनदेही के सीडीओ भरत मणि पांडेय ने कहा कि हम लोग भारतीय अधिकारियों के संपर्क में हैं। इस विषय पर कहीं भारतीय सीमा की तरफ रेडियो, अखबार या एफएम पर किसी प्रत्याशी का प्रचार न हो। इस पर ध्यान दिया जा रहा है।

घायल सिपाही की पीजीआई में इलाज के दौरान मौत

नौतनवां (महराजगंज)। पुलिस क्षेत्रधिकारी कार्यालय नौतनवां में सीओ तथा पुलिसकर्मियों ने लखनऊ में मृत सिपाही की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। सभी ने हेलमेट पहनकर बाइक चलाने की शपथ ली। जानकारी के मुताबिक निचलौल थाने में तैनात सिपाही संतोष सिंह गत 23 अक्तूबर को बाइक से कहीं जा रहे थे। अचानक कुत्ता आ गया जिससे टकराकर बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई जिससे गंभीर रूप से वह घायल हो गए थे। पीजीआई लखनऊ में इलाज हो रहा था। इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। सीओ नौतनवां अनुज कुमार सिंह ने बताया कि सिपाही की मौत की सूचना मिलने दो मिनट मौन धारण कर श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर साहब राव, पंकज यादव, अनूप कुमार आदि मौजूद रहे। निचलौल थाने में शोक सभा का आयोजन कर सिपाही को श्रद्धांजलि दी है। इंस्पेक्टर आनंद कुमार गुप्ता ने कहा कि सिपाही के अंतिम संस्कार के लिए शव को उनके पैतृक गांव आजमगढ़ भेजने की व्यवस्था की जा रही है।

आप के गंदगी हटाओ झाड़ू चलाओ अभियान का हुआ समापन

मीरजापुर ।आम आदमी पार्टी के तत्वाधान में 3 नवंबर से 15 नवंबर तक चल रहे गंदगी हटाओ झाड़ू चलाओ अभियान समापन किया गया। समापन दिवस पर नगर के महुवरियां से फतहा पोस्ट ऑफिस तक पदयात्रा निकाली गई। जिसमें मुख्य अतिथि मिर्जापुर प्रभारी नीरज पांडे थे। पदयात्रा जिलाध्यक्ष शेषधर दुबे के संचालन में हुई। पदयात्रा में पार्टी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी लक्ष्मी नारायण कुशवाहा, जिला मीडिया प्रभारी सत्येंद्र सिंह, व्यास मुनि तिवारी, सागर पाल, दिनेश चौबे, दिनकर, दीपू सेठ, रामाश्रय यादव, इम्तियाज अंसारी, चंद्रशेखर दुबे, रामबाबू यादव, संतोष विश्वकर्मा, मनबोध दुबे, समीर इन वर्ल्ड, संतोष विश्वकर्मा, संदीप विश्वकर्मा, अशफाक अहमद, बाबाजी के अलावा बहुत से कार्यकर्ता सम्मिलित हुए.

पंचायत सहायक ने तीन माह से मानदेय नही मिलने की किया शिकायत

दैनिक बुद्ध का संदेश

महराजगंज। नौतनवां ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत लक्ष्मी नगर निवासी अमन सिह ने सहायक विकास अधिकारी विकास खन्ड नौतनवां के नाम एक शिकायती पत्र दिया है। जिसमे अमन सिह ने लिखा है। की मै पंचायत सहायक डाटा कम एन्ट्री आपरेटर के पद पर अपने ग्राम पंचायत मे तैनात हू। बीते तीन माह से हमे मानदेय नही मिला है। मानदेय नही मिलनेसे हमे काफी कठिनाइयो का सामना करना पड रहा है। कार्य क्षेत्र मे बेस्ट पारफार्मर्स होने के बाद भी हमे ससमय परेशान किया जा रहा है। पंचायत सहायक ने मांग किया है की मानदेय मंत्रा डिवाइस दिलाने की कृपा करें जिससे हम अपने कार्य को सुचारु रुप से कर सके।और हमारा कार्य बाधित ना हो। इस सन्दर्भ मे एडिओ पंचायत रामकृष्ण प्रसाद ने बताया की मामला संज्ञान मे है। बहुत जल्द पंचायत सहायक का मानदेय दिया जायेगा।

उम्मीदों की सफारी से दुनिया के नक्शे पर उभरेगा चौक बाजार

महराजगंज। जंगल सफारी की शुरुआत होने से चौक बाजार विश्व मानचित्र पर उभरेगा। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने ..जंगल सफारी का शुभारंभ करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थल के रूप में इसके विकसित होने से पर्यटकों को जहां वन्यजीवों व वन संपदाओं को देखने का अवसर प्राप्त होगा, वहीं युवकों को रोजगार उपलब्ध ा कराने में भी सहायक होगा। इस सफारी से जहां जंगल की सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा, वहीं चौक बाजार भी नए स्वरूप में दिखेगा।

केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री इस मौके पर दिग्विजयनाथ इंटर कॉलेज के क्रीड़ास्थल पर इको टूरिज्म महोत्सव के तहत आयोजित समारोह को संबोधि ात कर रहे थे। उन्होंने जंगल सफारी के शुभारंभ को स्वीकृति देने के लिए मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताते हुए कहा कि सफारी की पहल से वनटांगियों की मुश्किल को दूर करने में भी काफी मदद मिलेगी।

विधायक ज्ञानेंद्र सिंह ने कहा कि विद्यार्थी सफारी का प्रयोग ज्ञानवर्धन में करें। विधायक जयमंगल कन्नौजिया ने कहा कि सफारी का शुभारंभ होना ऐतिहासिक है। इससे सोहगीबरवां प्रभाग व चौक बाजार दोनों की प्रदेश के पटल पर विशिष्ट पहचान होगी। विधायक ऋषि त्रिपाठी ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से बड़े कार्य के रूप में सफारी की शुरुआत हो रही है।

जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने कहा कि जंगल सफारी ज्ञानवर्धन में सहायक होने के साथ रोजगार की दृ ष्टि से भी सहायक होगा। मुख्य वन संरक्षक एपी सिन्हा ने कहा कि सफारी के माध्यम से आमजन को प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जानने का अवसर मिलेगा।

कार्यक्रम का संचालन जिला विद्यालय निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने किया। इस दौरान वन विभाग के प्रबंध निदेशक सुधीर कुमार शर्मा, महाप्रबंधक सुजाय बनर्जी, डीएफओ पुष्प कुमार कांधला, अपर जिलाधि ाकारी डॉ. पंकज वर्मा, टूर आपरेटर राकेश गुप्ता व ज्ञानेंद्र त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम की बढ़ाई रौनक

जंगल सफारी के शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम की रौनक बढ़ाने का कार्य किया। महंत अवेद्यनाथ महाविद्यालय की छात्राओं ने जहां मन की वीणा से गुंजित ध्वनि मंगलम नामक स्वागत गीत प्रस्तुत किया, वहीं दिग्विजय नाथ इंटर कॉलेज की छात्रा अंकिता चौधरी ने मेरे ढोलना सुन.. नामक गीत पर शानदार नृत्य प्रस्तुत किया। इसके बाद आरके सनशाइन स्कूल के बच्चों ने बेजुबां कहता ही रहा.. गीत पर पर्यावरण तथा पैरामाउंट एकेडमी के बच्चों ने मेरे देश की धरती.. गीत पर कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मनोरंजन किया। मुख्य वन संरक्षक ने भी तजुर्बा नामक प्रस्तुति से लोगों का भरपूर मनोरंजन किया।

फोटो गैलरी व स्टाल का किया अवलोकन

केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौध ारी ने कार्यक्रम स्थल पर लगाई गई फोटो गैलरी व प्रदर्शनी का अवलोकन किया। फोटो गैलरी में सोहगीबरवां वन्यजीव प्रभाग के विभिन्न स्थलों को देखते हुए जहां उन्होंने जानकारी ली, वहीं वनटांगिया समुदाय के रहन–सहन व भाषा–शैली की जानकारी हासिल की। इसके बाद उन्होंने जंगल सफारी के लोगो व एवं लोगोयुक्त टी–शर्ट व कैप को भी देखा।

हरी झंडी दिखाकर वाहन को किया रवाना, स्वयं भी लिया आनंद

कार्यक्रम के अंत में केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ने दो जिप्सी वाहनों को हरी झंडी दिखाकर सफारी के लिए रवाना किया। इसके उपरांत एक वाहन पर केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री व सभी विधायक तथा दूसरे वाहन पर जिलाधिकारी समेत अन्य अधिकारी जंगल सफारी के लिए गए। चौक क्षेत्र के जंगलों में सभी ने सफारी का लुत्फ उठाया।

केंद्रीय वित्त मंत्री ने अधिकारियों को भी किया सम्मानित

चौक बाजार। जंगल सफारी के शुभारंभ को ऐतिहासिक कदम बताते हुए केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ने इसे मूर्त रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार, मुख्य विकास अधिकारी गौरव सिंह सोगरवाल, पुलिस अधीक्षक डॉ. कौस्तुभ, डीएफओ पुष्प कुमार कांध ाला व अपर जिलाधिकारी डॉ. पंकज कुमार वर्मा को भी सम्मानित किया। इसके अलावा जंगल सफारी के बारे में ज्ञानवर्धक किताब तैयार करने वाले सिसवां के अंकित पटेल को केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ने जहां सम्मानित किया, वहीं जिलाधिकारी ने उनके प्रयासों की सराहना की।

सोनौली में जल्द ही मिलेगी एयरपोर्ट की सुविधा

महराजगंज। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार जिले के विकास के लिए तत्पर है। सोनौली में जल्द ही एयरपोर्ट की सुविधा मिलेगी। इसके बन जाने से स्थानीय लोगों को जहां देश–विदेश के अलग–अलग स्थलों पर जाने की सुविधा मिलेगी। वहीं नेपाल की यात्रा करने वाले पर्यटक भी यहां तक की यात्रा कर अपने समय की बचत कर सकेंगे।

अब महराजगंज में लीजिए जंगल सफारी का आनंद

महराजगंज। पर्यटक अब महराजगंज के सोहगीबरवां वन्यजीव प्रभाग में जंगल सफारी का आनंद ले सकेंगे। करीब 34 किलोमीटर के जंगल के सफर में अनेक प्रकार के वन्य जीव और पक्षियों का दीदार किया जा सकता है। इको टूरिज्म कार्यक्रम के तहत चौक बाजार में औपचारिक रूप से जंगल सफारी का शुभारंभ किया गया है। दो रूटों पर सफारी के रोमांच का आनंद लेने के लिए पर्यटकों को 3700 रुपये खर्च करने होंगे। फिलहाल, इसकी बुकिंग उत्तर प्रदेश इको टूरिज्म की वेबसाइट (यूपी इको टूरिज्म डॉट इन) पर सोहगीबरवां वन्यजीव प्रभाग का विकल्प चुनकर की जा सकती है। जल्द ही काउंटर पर बुकिंग शुरू होगी। सफारी के प्रत्येक ट्रिप से वन विभाग को 300 रुपये का राजस्व प्राप्त होगा।

वन विभाग की ओर से जंगल सफारी के लिए दो रूट तय किए गए हैं। 12 किलोमीटर के पहले रूट की शुरूआत चौक से होगी। कुसमहवा, रामग्राम, सोनाड़ी देवी मंदिर होते हुए वापस चौक पर पर्यटकों को छोड़ा जाएगा। इस रूट पर जंगल सफारी का आनंद लेने के लिए पर्यटकों को 1500 रुपये खर्च करने होंगे।

दूसरा रूट 22 किलोमीटर का होगा, जो चौक से प्रारंभ होकर कुसमहवा, 24 वनटांगिया, ट्रामवे चौराहा, मधवलिया, सिंगरहना होते हुए वापस चौक पहुंचेगा। इस रूट के लिए पर्यटकों को 2200 रुपये खर्च करने पड़ेंगे। सोहगीबरवां वन्यजीव प्रभाग के प्रभागीय वनाधि ाकारी पुष्प कुमार कांधला ने कहा कि जल्द ही टिकट काउंटर पर सफारी की बुकिंग प्रारंभ होगी।

केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ने किया बुकिंग खिड़की का शुभारंभः केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने टिकट की बुकिंग के लिए चौक में बनाई गई बुकिंग खिड़की का शुभारंभ किया। इसके बाद कुसमहवा अतिथि गृह पहुंचे। उन्होंने डीएफओ को निर्देशित किया कि सफारी शुरू होने के बाद परिवहन संबंधी गतिविधियों को नियंत्रित करें। वनटांगिया गांव के लोगों की आय को बढ़ाने का भी निर्देश दिया। 24 टांगिया में बिरसा मुंडा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कीः चौक बाजार। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री ने जंगल सफारी के दौरान 24 टांगिया पहुंचकर बिरसा मुंडा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। सभी ने स्थानीय ग्रामीणों की ओर से बनाई गई लस्सी का सेवन किया। केंद्रीय मंत्री ने सदर व पनियरा विधायक के साथ आंगनबाड़ी केंद्र पर पौधरोपण किया और स्थानीय लोगों से सफारी से जुड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि सफारी के शुरू होने से वनटांगिया के जीवन पद्धति को नजदीक से समझने का अवसर मिलेगा तथा वनटांगिया वासी भी अपनी आय को बढ़ा सकेंगे।

पीपीपी मॉडल पर चलेगी सफारी

चौक बाजार। पीपीपी मॉडल पर चलने वाली सफारी का काम देखने वाली संस्था से जुड़े ज्ञानेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि आमजन ीजजचरूध्ध् वींहपइंतूं.कवज.पद पर भी बुकिंग कर सकेंगे।

जंगल सफारी के रूट पर दिखेंगे ये वन्यजीवः जंगल सफारी के दोनों रूट पर तेंदुआ, हिरण, भालू, जंगली बिल्ली, लोमड़ी, नीलगाय, चीतल, बारहसिंगा, बंदर, लंगूर, नेवला, गिलहरी, सेही आदि का दीदार हो सकेगा। पक्षियों में मोर, बटेर, जंगली मुर्गी, कबूतर, बगुला, चील, गिद्ध, उल्लू, गौरैया, तोता आदि नजर आएंगे। वहीं, सिंगरहना ताल में प्रवासी पक्षी के रूप में लालसर, नीलसर, कामन पोचर्ड, कामन टील, विजिपेन, नारगेनी, सोवलर व पिनटेल आदि पक्षी दिखेंगे।

ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार दो गंभीर रूप से घायल

लालगंज, मीरजापुर ।स्थानीय थाना क्षेत्र के लहंगपुर चौकी अंतर्गत मलेट्री कंपाउंड के पास 11:30 बजे एक ट्रक और बाइक में टक्कर हो गई। टक्कर लगने से बाइक सवार चितांग गांव निवासी दो व्यक्ति घायल हो गए। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर दोनों घायलों को अस्पताल भेजा। लालगंज थाना क्षेत्र के लहंगपुर चौकी अंतर्गत मलेट्री कंपाउंड के पास 11.30 बजे चितांग गांव निवासी दुखीराम का 35 वर्षीय पुत्र दशरथ व हरीलाल का 50 वर्षीय पुत्र मिंता घायल हो गए ।सूचना पर लहंगपुर चौकी इंचार्ज धनंजय सिंह अपने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर दोनों घायलों को उपचार के लिए भेजते हुए ट्रक को अपने कब्जे में कर आवश्यक जांच पड़ताल में जुट गए। बताया गया कि चितांग गांव निवासी दोनों व्यक्ति मीरजापुर किसी काम से बाइक से जा रहे थे कि मलेट्री कंपाउंड के पास सामने से आ रही ट्रक में टक्कर हो गई जिसमें ट्रक के चक्के के नीचे बाइक दब गई। वहीं पर बाइक चालक व बाइक सवार दोनों लोग घायल हो गए। दोनों घायलों के परिजन मौके पर पहुंच गये।

बुखार का बढ़ा प्रकोप, मरीजों को नहीं मिल पा रहीं पूरी दवाएं

देवरिया। मौसम के परिवर्तन ने जिले में बुखार रोगियों की संख्या बढ़ा दी है। इसी बीच जिला अस्पताल में कुछ दवाओं की कमी ने मरीजों की परेशानी को और बढ़ा दिया है। अस्पताल में आने वाले मरीजों को पैरासिटामॉल तो आसानी से मिल जा रही है। लेकिन, गैस, दर्द और सुगर जैसी अन्य दवाओं के लिए उन्हें बाहर का रुख करना पड़ रहा है। मौसम में परिवर्तन के कारण महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कॉलेज से संबद्ध जिला अस्पताल में संक्रामक रोगों के मरीजों की भीड़ बढ़ गई है। ओपीडी में हर रोज एक हजार से 1200 तक मरीज पहुंच रहे हैं। इसमें जिले के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा बिहार प्रांत के सीमावर्ती गांवों के मरीज भी शामिल हैं। इन दिनों बुखार, सर्दी, जुकाम, सांस, शरीर दर्द, डेंगू, पेट दर्द के मरीजों की संख्या में इजाफा हो गया है। मेडिसिन विभाग में मरीजों की भीड़ उमड़ रही है। दवा काउंटर पर पहुंचने पर लोगों को पूरी दवा नहीं मिल रही है। अस्पताल में हर रोज तकरीबन पंद्रह हजार से अधि ाक गोलियां वितरित की जा रहीं हैं। इसके बाद भी कुछ दवाओं की कमी बनी हुई। अस्पताल में जनपदीय औषधि वेयर हाउस से दवा की सप्लाई होती है। डिमांड भेजी जाती है, लेकिन उसके अनुसार आपूर्ति नहीं हो रही है। वहीं कुछ दवाएं उपलब्ध ही नहीं हैं, जिससे दवाओं की किल्लत है। गैस की ओपरमाजोल गोली के अलावा कई जरूरी दवाएं तथा झटका सहित कई महत्वपूर्ण इंजेक्शन मरीजों बाहर से खरीदने पड़ रहे हैं। हर रोज चार हजार गोली पैरासिटामॉल की खपतः अस्पताल में हर रोज तकरीबन 3500 चार हजार पैरासिटामॉल गोली, दो सौ फाइल सीरप, एंटीबायोटिक दो हजार, सीरप सौ फाइल, लीवोसीट्रिजीन तीन हजार, गैस की गोली पैंतीस सौ वितरित की जा रही है। इन दवाओं की है कमी – जनपदीय औषधि वेयर हाउस से आपूर्ति न होने के कारण अस्पताल में डाइक्लोफेनिक, एसिक्लोफेनिक, दर्द के लिए जेल ट्यूब, गैस की ओप्रामाजोल, झटका का इप्सोलीन इंजेक्शन, मेंटाल 20 प्रतिशत, आपरेशन व शुगर के मरीजों को चढ़ने वाला आरएल बोतल व कुछ अन्य दवाएं की कमी है।

भारतीय जनता पार्टी ने नगर पालिका चुनाव को लेकर किया बैठक

युवा भाजपा नेता विष्णु जयसवाल (सोनू) ने मुख्य अतिथि को अंग वस्त्र पहनाकर स्वागत किया

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। बुधवार को राजा पशुपति मैरिज हाल में भारतीय जनता पार्टी द्वारा नगर निकाय चुनाव को लेकर एक बैठक किया गया। जिसमें बैठक के मुख्य अतिथि सत्येंद्र सिन्हा रहे उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि सभी संगठन के पदाधिकारी व बूथ प्रभारी अपने–अपने वार्ड में लगकर इस बार नगर निकाय चुनाव में भाजपा को जिताना है। इसी तरह नगर चुनाव प्रभारी अष्टभुजा शुक्ला ने कहा कि कार्यकर्ता संगठन का रीड का हड्डी होता है जिला प्रभारी राम जियावन मौर्य, राजेंद्र पाल चौधरी नगर संयोजक केशभान राय ने भी बैठक को संबोधित किया। बैठक में सर्वप्रथम सभी अतिथियों का स्वागत माला पहना कर किया गया तत्पश्चात भाजपा के युवा नेता विष्णु जयसवाल सोनू ने मुख्य अतिथि का स्वागत अंग वस्त्र पहनाकर किया बैठक का संचालन जिला महामंत्री विजय कांत चतुर्वेदी ने किया। बैठक में आए सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों को जिला अध्यक्ष गोविंद माधव ने धन्यवाद ज्ञापित किया इस दौरान बैठक में नगर निकाय प्रकोष्ठ के जिला संयोजक बलराम कुलश्रेष्ठ, राकेश अग्रहरी, विष्णु जयसवाल (सोनू) गौरी शंकर अग्रहरी ,अजय कुमार श्रीवास्तव, रामशरण मौर्य, अमरनाथ अग्रहरि, अनुपमा सिंह, संतोष त्रिपाठी ,आनंद मणि त्रिपाठी सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जिला सूचना कार्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय प्रेस दिवस

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। सचिव भारतीय प्रेस परिषद सूचना भवन नई दिल्ली द्वारा जनपद स्तर पर प्रेस दिवस मनाये जाने की अपेक्षा की गयी है। उक्त के

क्रम में जनपद सिद्धार्थनगर में सम्मानित प्रिन्टध्इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रतिनिधि ायों की उपस्थिति में जिला सूचना कार्यालय, सिद्धार्थनगर में प्रेस दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रेस दिवस के अवसर पर आयोजित गोष्ठी में जनपद के प्रिन्टध्इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा अपने अपने विचार व्यक्त किया। पत्रकार के दायित्व सदैव महत्वपूर्ण रहे है। पुराने समय में जन चेतना फैलाने के लिए पत्रकारिता की जाती थी। आज यह जिम्मेदारी और बढ़ गयी है। पत्रकारो को चाहिए कि वह अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ करे। पत्रकारो को समाज का चौथा स्तम्भ कहा जाता है इसलिए पत्रकारो का दायित्व अधिक बढ़ जाता है कि वह समाज को सही रास्ता दिखाये। इस अवसर पर जिला संवाददाता अमर उजाला अभिमन्यु चौधरी, हिन्दुस्तान इन्द्रमणि पाण्डेय, कैलाश द्विवेदी, अरविन्द झा, राजेश शर्मा, सिहेंश ठाकुर, परवेज अहमद, अनिल तिवारी, नफीस सलमान, परमात्मा शुक्ल, कृपाशंकर भट्ट, ब्रम्हदीन वरूण, सुशील मिश्रा, सन्दीप मद्धेशिया, सत्यप्रकाश, चन्द्रभान, सूचना विभाग के प्रधान सहायक नजमुल हुदा, विनय सिंह, नवेन्दु शुक्ल, लवकुश, दयाराम चौहान तथा अन्य मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

मधुमेह को सिर्फ दवा से नहीं बल्कि जागरूकता से रोका जा सकता है: डॉ मधुकर राय

दैनिक बुद्ध का संदेश

अनपरा/सोनभद्र। हिण्डाल्को रेनुसागर के टीटीएमडीसी में मधुमेह रोग से निजात पाने के लिये महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मधुमेह के कारणों और उसके निवारण को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में आये बीएचयू के चिकित्सा विज्ञान संस्थान से मेडिसीन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मधुकर राय ने कहा कि डायबिटीज एक आजीवन रहने वाली बीमारी है। यह एक मेटाबॉलिक डिसॉर्डर है, जिसमें मरीज के शरीर के रक्त में ग्लूकोज का स्तर बहुत अधिक होता है। इस लिये मधुमेह को सिर्फ दवा से नहीं बल्कि जागरूकता से रोका जा सकता है। आहार–विहार की इसमें सबसे बड़ी भूमिका होती है। लोग यदि जागरूक नहीं हुए तो आने वाला समय काफी मुश्किलों से भरा होगा। कार्यशाला में हिण्डाल्को रेनुसागर के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को सम्बोधित करते हुये रेनुसागर हेल्थ सेंटर के चिकित्साधिकारी डॉक्टर अभय कुमार दुबे ने बताया कि मधुमेह का प्रबंधन करने में संतुलित जीवनशैली एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और बीमारी का सटीक प्रबंधन करने के लिए ग्लाइसेमिया पर आहार और शारीरिक गतिविधियों के प्रभाव को समझना आवश्यक है। डॉक्टर दुबे ने कहा कि डायबिटीज मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालता है जिसके कारण वो इंसान डिप्रेशन, और एंग्जाइटी का शिकार हो जाता है। मानसिक संतुलन के लिए जरूरी है की खून में शुगर लेवल की मात्रा सही हो। कार्यशाला के अंत मे हिण्डाल्को रेनुसागर के अध्यक्ष ऊर्जा के पी यादव ने मुख्यातिथि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉक्टर अनिता, डॉ प्रतेश, डॉ मनोज, डॉ सोनी सहित भारी संख्या में अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

48 घंटे बीत जाने के बाद अभी जोगिया पुलिस बाइक चोर का नहीं कर पाया खुलासा

दैनिक बुद्ध का संदेश

जोगिया/सिद्धार्थनगर। बुढी राप्ती नदी के तट पर दाह–संस्कार में शामिल होने गए युवक की बाइक सोमवार को पुल के किनारे से गायब हो गयी। पीड़ित ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की माग की है। बताते चलें 48 घंटे बीट जाने के बाद अभी तक बाइक चोर का नहीं हुआ खुलासा पीड़ित युवक चिल्हिया थाना क्षेत्र के करौदा नानकार निवासी मनोज कुमार मिश्रा ने कोतवाली में तहरीर देकर कहा कि वह ककरही घाट पर अपने एक शुभचिंतक के दाह–संस्कार में शामिल होने आए थे। पुल के नीचे वाहन नहीं जा सकता था, इसलिए अपनी बाइक राष्ट्रीय राजमार्ग से सटे पुल के किनारे खड़ कर घाट पर चले गए। वापस लौटे तो बाचक गायब थी। जोगिया पुलिस का कहना है तहरीर मिली है कार्रवाई की जा रही है।

यातायात जागरुकता अभियान के तहत थानाध्यक्ष ने लोगों को किया जागरुक

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। यातायात जागरुकता माह–नवम्बर वर्ष–2022 के तहत थानाध्यक्ष कर्मा राजेश कुमार सिंह द्वारा कर्मा,केकराही बाजार में यातायात जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान थानाध्यक्ष द्वारा उक्त कार्यक्रम में वाहन चालकों,राहगीरों, छात्र छात्राओं को यातायात नियमों का पालन करने की अपील की गयी। बाजार में उपस्थित लोगों से अपील किया गया कि वे बिना हेलमेटध्सीट बेल्ट के, मोबाइल से बात करते हुए, अत्यधिक तेज गति में तथा गलत दिशा से वाहन न चलायें जिससे कि सभी सुरक्षित अपने–अपने घरों पर पहुंचे। तथा सभी से बगैर लाइसेंस के वाहन न चलाने हेतु बताया गया साथ ही साथ सड़क पर वाहनों के बीच उचित दूरी बनाये रखने हेतु भी जागरुक किया गया। सिंह द्वारा सड़क दुर्घटना होने वाले कारणों तथा इसके उपरान्त होने वाली कानूनी प्रक्रिया के सम्बंध में भी लोगों को जानकारी दी गयी, तथा तथा मित्रों को भी इस सम्बंध में जागरुक करने की अपील की। जिससे सड़क पर सभी यातायात नियमों का पालन करें तथा सुरक्षित रहें। इस सम्बंध में जागरुकता सम्बंधी पोस्टरध्पम्पलेट आदि के माध्यम से जागरुक किया गया।

नेत्र शिविर में 250 मरीजों की हुई जांच, 35 का होगा आपरेशन

आंखें सभी के लिए अनमोल हैं स्वास्थ्य के प्रति गंभीर रहें रू जे.के जायसवाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। राज आई हास्पिटल गोरखपुर के सौजन्य से बुधवार को बीएसएन ग्लोबल स्कूल बेलावं उर्फ शाहपुर में निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर्स की टीम ने शिविर में आए 250 नेत्र रोगियों की जांच की। वहीं मोतियाबिंद बीमारी से ग्रस्त 35 मरीजों को ऑपरेशन के लिए चुना गया है। जिनका निःशुल्क ऑपरेशन राज आई हास्पिटल गोरखपुर में कराया जाएगा। शिविर शुभारंभ करते हुए विद्यालय के निदेशक जे के जायसवाल ने कहा कि इस दुनिया में जन्म लेने वाले जितने भी प्राणी हैं। उनके लिए आंखें अनमोल हैं। इसलिए इनकी देखभाल बहुत जरूरी है। आखिर आंखें हैं तो दुनिया की तमाम खूबसूरती का हमारे लिए मायने है। आंखें हमारे लिए अनमोल हैं और इसके बिना हम इस खूबसूरत दुनिया को नहीं देख सकते। यह जानते हुए भी अक्सर हम आंखों के स्वास्थ्य के बारे में बहुत गंभीरता से नहीं सोचते। इसी के तहत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें जिले के सबसे बड़े और अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित राज आई हास्पिटल द्वारा निरूशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाए जाते हैं। इसकी जितनी भी तारीफ की जाए उतनी कम हैं। ऐसे शिविर के माध्यम से गरीब वर्ग के मरीजों को बेहतर इलाज मिलता है। विद्यालय शैक्षणिक विकास के साथ सामाजिक कार्य को पूरी जिम्मेदारी के साथ करता है। जिन मरीजों को ऑपरेशन के लिए चुना गया है। उनका निरूशुल्क आपरेशन कराया जाएगा। इस अवसर पर सुनील कुमार यादव, अंकित दूबे, सूरज गौड़, रेहान खान, लाल बचन, दीपक सिंह, चन्द्रकला मौर्य, चन्द्रमति यादव, वर्षा श्रीवास्तव, कुसुम, सुमन, प्रतिभा, बबीता आदि मौजूद रहे।

एक ने गायकी में तो एक ने मॉडलिंग में किया जिले का नाम रोशन बने मिस्टर बैतालपुर

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिले के दो युवाओं ने जनपद का नाम रोशन किया जब उन्हें मॉडलिंग में प्रथम पुरस्कार पुरस्कार और गायिका में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ जिले के चिल्हिया थाना क्षेत्र के निवासी लक्ष्मीनगर एन के खान ने अपने क्षेत्र और गांव सहित जनपद का किया नाम रोशन उमंग सिंगिंग मॉडलिंग डांस चौंपियनशिप कार्यक्रम में मॉडलिंग में प्रथम स्थान पुरस्कार पाकर जिले का नाम रोशन किया वहीं दूसरी तरफ तेतरी बाजार के निवासी सोनू के के आर ने गायिका की दुनिया में सिंगिंग चौंपियनशिप मे दूसरा स्थान पाकर परिवार सहित जिले का नाम रोशन किया इस दौरान उमंग सिंगिंग डांस मॉडलिंग चौंपियनशिप बैतालपुर में जब जज ने एन के खान को मॉडलिंग करते हुए देखा दर्शकों ने जमकर ताली बजाई जहां उन्हें मिस्टर बैतालपुर नाम से सम्मानित किया गया वही सोनू के के आर ने जब गाना गाया तो मानो इनकी आवाज को लोगों ने बहुत प्यार दिया ऐसे में उन्हें द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया वही आपको बता दें दोनों ही लोगों ने अपने परिवार और गुरुओं को सिद्धार्थनगर के लोगों सहित दर्शकों को पुरुस्कार समर्पित किया।

शिव पाण्डेय को अ0भा0 कांग्रेस कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया

दैनिक बुद्ध का संदेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता प्रो0 हिलाल अहमद ने बताया कि वरिष्ठ एवं युवा नेता शिव पाण्डेय को अ0भा0 कांग्रेस कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को जमीन से जोड़ने के लिए एवं युवाओं को कांग्रेस में लाने के लिए अ0भा0 कांग्रेस कमेटी द्वारा लिया गया यह एक अहम फैसला है। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेसजनों ने अ0भा0 कांग्रेस कमेटी की महामंत्री एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा को धन्यवाद ज्ञापित किया है तथा श्री शिव पाण्डेय को इसके लिए शुभकामनाएं दी हैं।

पूर्व विधायक को पुलिस ने हेलमेट जांच के दौरान रोक

दैनिक बुद्ध का संदेश

महराजगंज। सोनौली कोतवाली क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित बुध चौक पर सोनौली पुलिस ने यातायात जागरूकता अभियान के क्रम में भारत से नेपाल सहित स्थानीय कस्बे में बाइक से भ्रमण करने वाले लोगों की पुलिस ने गहन जांच किया। इस जांच के क्रम में पूर्व विधायक नौतनवा भी फस गए। और उन्होंने हेलमेट लगाया और क्षेत्र की जनता को हेलमेट लगाकर चलने की अपील भी किया। खबरों के मुताबिक आज हेलमेट जागरूकता रैली निकाली गई। रैली विभिन्न स्थानों से भ्रमण कर सोनौली क्षेत्र के बुध चौक पहुंच गई और दोपहिया वाहनों की जांच शुरू कर दिया। जो लोग हेलमेट लगाकर नहीं चल रहे थे। उन्हे रोककर हेलमेट लगाने का समय दिया गया। इसी क्रम में प्रभारी कोतवाल सोनौली महेंद्र यादव ने स्वयं स्कूटी से नगर में टहलने जा रहे पूर्व विधायक नौतनवा समाजवादी पार्टी के नेता कुंवर कौशल उर्फ मुन्ना सिंह को रोक लिया। विधायक हेलमेट लगाकर पुलिस जवानों के साथ फोटो खिंचवाए और जनता से अपील किया कि घर से निकले तो हेलमेट अवश्य लगाकर निकले यह हमारी सुरक्षा के लिए है। पुलिस ने पूर्व विधायक को हेलमेट लगाने तथा लोगों को जागरूक करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। हालांकि पुलिस द्वारा पूर्व विधायक को राष्ट्रीय राजमार्ग पर रोककर जांच करने की खबर लोगों में चर्चा का विषय बना रहा।

विश्व हिंदू परिषद द्वारा चलाया जा रहा महा अभियान

दैनिक बुद्ध का संदेश

बाराबंकी। संपूर्ण देश भर में विश्व हिंदू परिषद द्वारा चलाए जा रहे हित चिंतक महा अभियान की सहभागिता करते हुए आज प्रखंड सिरौलीगौसपुर के अंतर्गत कई ग्राम में हित चिंतन महा अभियान चलाया गया और दर्जनों हिंदू भाइयों को विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल का हित चिंतक बनाया गया जिसमें आयुष नाग जी ने बताया कि विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल का लक्ष्य है हर हिंदू भाई बहन के घर पहुंच कर उनको विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल का हित चिंतक बनाना उन्होने कहा कि संपूर्ण विश्व के अन्दर हिन्दू संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने भारत माता को अखंड बनाने व भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए विश्व हिंदू परिषद के हित चिंतक बने। आपका हित चिंतक (सदस्य, विश्व हिंदू परिषद) बनना संगठन के लिए गौरव व आप के सौभाग्य की बात है। जिला सहसंयोजक अरविंद कुमार तिवारी जी प्रखंड अध्यक्ष अजय पाल पटेल जी आयुष नागजी हिमांशु नागजी आदि कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

इस संक्रमण से घबराने की नहीं बल्कि खुद को व लोगो को जागरूक करने की जरूरत है: गुड्डू खान

दैनिक बुद्ध का संदेश

महराजगंज। पूरे प्रदेश में तेजी के साथ फैल रहे डेंगू के संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए सरकार पूरी तरह से कटिवद्ध है, नौतनवा नगर में भी आमजन को जागरूक करने के लिए सीरत एजुकेशनल चौरिटेबल ट्रस्ट व लाइफ केयर हॉस्पिटल कुनसेरवा के तत्त्वाधान में आज एक जागरूकता रैली निकाली गई जिसको नौतनवा नगर पालिका अध्यक्ष गुड्डू खान ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष ने बताया कि डेंगू मच्छर के काटने से होने वाला बुखार है, तेज बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, आंखों के पिछले हिस्से में दर्द, मसूड़ों व नाक में खून आना डेंगू बुखार के लक्षण हैं। इससे घबराने की नहीं बल्कि जागरूक होने की जरूरत है। लाइफ केयर हॉस्पिटल के डॉ0 नाजिर खान ने बताया कि रुके हुए पानी में मच्छर का लारवा दिखे, तो वहां काले तेल का छिड़काव किया जाय, कूलरों के पानी को बदलते रहना चाहिए ताकि मच्छरों को खत्म किया जा सके। सीरत एजुकेशनल ट्रस्ट के अध्यक्ष समीम अशरफी ने बताया कि इससे बचाव के लिए यह जरूरी है कि हम अपने घर के आस–पास पूरी सफाई रखें, पानी जमा ना होने दें टंकी के ऊपर ढक्कन लगाकर रखें, छत पर ऐसा कोई भी सामान न रखें जिसमें वर्षा का पानी इकट्ठा हो। इस अवसर पर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष सैय्यद वहाज अहमद, अतीक अहमद, अमित त्रिपाठी, राहुल त्रिपाठी, राजा अग्रहरी, संजय कुमार, शाहनवाज खान, अशोक कुमार, गुड्डू अन्सारी, रोहित चौहान, संजय मौर्य, विशाल जाय0, मो0 शकील, सुनील जाय0, धीरेन्द्र सागर, सूरज गौड़, आजम, महबूब आलम, वसीम सिद्दिकी, मो0 अतीक अंसारी, संजय सिंह, मो0 आजम कुरैशी, व्यापार मंडल अध्यक्ष संतोष जाय0, अमित जाय0 आदि लोग उपस्थित रहे।

किसान नेताओं ने ज्वलंत समस्याओं को लेकर नवागत पुलिस अधीक्षक से की मुलाकात

दैनिक बुद्ध का संदेश

बाराबंकी। भारतीय किसान मजदूर यूनियन (शक्ति) के अध्यक्ष–संस्थापक शुऐब राईन ने यूनियन के समस्त पदाधिकारियों सहित पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर नवागत पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह से मुलाकात कर किसानों की ज्वलंत समस्याओं के संबंध में बैठक की तथा नवागत पुलिस अधीक्षक से वार्ता कर किसानों तथा मजलूमो के साथ न्याय किये जाने की उम्मीद जताई। वहीं इस अवसर पर यूनियन के मीडिया प्रभारी डॉक्टर बिलाल अहमद,डॉक्टर शाहिद खान, सुहैल अहमद अंसारी, विधिक सलाहकार देश दीपक तिवारी, एडवोकेट–महामंत्री अजय अवस्थी, युवा जिलाध्यक्ष आफताब अंसारी, जिला प्रभारी सेठी चौधरी, जिला उपाध्यक्ष रफीक सलमानी, नगर प्रभारी रिजवान उर्फ फत्तू, जिला सचिव शकील सिंगर, संगठन मंत्री उस्मान राईन, नगर सचिव जान मोहम्मद उर्फजानू, सैफुद्दीन, इसरार, अमित, चंदन, सोनू आदि किसान नेता मौजूद रहे।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

सेहत बनाने का सबसे सस्ता तरीका हैं रस्सी कूदना, जानें इससे मिलने वाले फायदे

आज की बदलती जीवन–शैली और व्यस्त जिंदगी में खुद के लिए समय निकाल पाना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन सेहत बनाए रखने के लिए समय निकालते हुए दिनचर्या में व्यायाम को जरूर शामिल करना चाहिए। ऐसे में आप रस्सी कूदना अर्थात स्किपिंग को ट्राई कर सकते हैं जो कि सेहत बनाने का सबसे सस्ता तरीका हैं। फिटनेस लेवल को बढ़ाने के साथ ही कुछ लोग इसे वजन घटाने के लिए चुनते हैं। आपको अपने फिटनेस रूटीन में स्किपिंग को जरूर शामिल करना चाहिए। यह सिंपल, आसान और बहुत मजेदार वर्कआउट है साथ ही यह आपको बहुत सारी कैलोरी बर्न करने में मदद करता है। आज इस कड़ी में हम आपको बताने जा रहे हैं कि किस तरह रस्सी कूदने से शरीर की सेहत बनाई जा सकती हैं।

थकान से छुटकारा मिलता है

लगातार काम करने से आप थका हुआ महसूस कर सकते हैं। स्किपिंग आपको अपनी सहनशक्ति में सुधार करने में मदद कर सकता है। जितना अधिक आप नियमित रूप से स्किपिंग करते हैं, उतना ही आपकी सहनशक्ति बढ़ती है। लगातार स्किपिंग रेंज का अभ्यास थकान से छुटकारा पाने में मदद कर सकता है।

हृदय स्वास्थ्य में सुधार

रस्सी कूदने से हृदय को स्वस्थ रखा जा सकता है। दरअसल, रस्सी कूदने से हृदय की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। रस्सी कूदने से कार्डियो सर्कुलेशन यानी ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है, जो ब्लड को पंप करने के लिए जरूरी होता है। हृदय के स्वस्थ रहने से हार्ट स्ट्रोक और हृदय से जुड़े अन्य जोखिम से बचा जा सकता है। यही वजह है कि रस्सी कूदना को कार्डियो एक्सरसाइज की लिस्ट में जगह दी गई है।

पेट की चर्बी होती है कम

इसे करने से आपके पेट की चर्बी तेजी से कम होती है। जी हां, वजन कम करते समय यह मुख्य बाधाओं में से एक है। लेकिन रस्सी कूदना इसमें आपकी मदद कर सकता है। हाई–इंटेंसिटी इंटरवल ट्रेनिंग एक्सरसाइज बिना डाइट के पेट की चर्बी कम करने और आपके पेट की मसल्स को मजबूत करने में मदद करती है।

कैलोरी बर्न करने में मददगार

अगर कोई मोटापा कम करना चाहता है, तो उनके लिए रस्सी कूदना लाभकारी हो सकता है। रोप स्किपिंग से शरीर में मौजूद अतिरिक्त कैलोरी को बर्न करने में मदद मिल सकती है। इसलिए, ऐसा कहा जा सकता है कि रस्सी कूदने के फायदे कैलोरी बर्न करने के लिए हो सकते हैं।

बढ़ता है शरीर का लचीलापन

रस्सी कूदने से आपका शरीर शांत और लचीला बनता है। कूदने से मांसपेशियों को बहुत ताकत मिलती है और उन्हें आराम मिलता है। इसलिए इसे एक एथलीट के वर्कआउट रिजीम में शामिल किया जाता है।

हड्डियों को मजबूत करता है

एक आयु के बाद बोन मास कम हो जाता है, और मेनोपॉज के बाद महिलाओं में बोन लॉस अधिक तेजी से होता है। इसलिए रस्सी कूदना फायदेमंद हो सकता है। इससे हड्डियों की ताकत बढ़ती है। रस्सी कूदने से हड्डियों के जोड़ एक्शन में होते हैं जिससे इनमें पर्याप्त लुब्रिकेशन होता है। इससे ये काम करते रहते हैं और एक जगह जमते नहीं।

एकाग्रता को बढ़ाता है

हर कार्डियो एक्सरसाइज आपको अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगी और स्किपिंग उनमें से एक है। रस्सी कूदना आपके शरीर को शांत कर सकता है और आपकी एकाग्रता को बढ़ा सकता है। इसके अलावा, स्किपिंग लगातार आपके समन्वय और सहनशक्ति में सुधार करता है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद

रस्सी कूदना दिमाग में रक्त संचार को बढ़ाता है जिससे चिंता और तनाव जैसी मानसिक समस्याओं में मदद कर मिल सकती है। यह कॉगनिटिव फंक्शन्स को भी बेहतर करने में मदद करता है।

इंडिया लॉकडाउन में अपने अभिनय को लेकर साई ने की बात

साई ताम्हनकर मधुर भंडारकर की श्इंडिया लॉकडाउनच्य में नजर आएंगी, जिसका प्रीमियर आईएफएफआई गोवा में होगा।

उन्होंने कहा कि फिल्म निर्माता के साथ काम करना किसी भी अभिनेत्री के लिए अपने आप में एक अलग बात है। अभिनेत्री मधुर भंडारकर की श्इंडिया लॉकडाउनच्य में एक अभिन्न भूमिका निभाती नजर आएंगी। अपने अनुभव के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, पहले तो ऐसा लगा कि मैं सपना देख रही हूं। मधुर सर की फिल्म का हिस्सा बनना किसी भी अभिनेत्री के लिए अपने आप में एक अलग बात है।

मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। इतने वर्षों के बाद भी, अभी भी कुछ चीजें हैं जो मैं केवल भारत लॉकडाउन पर काम करते हुए महसूस कर पा रही थी। मैं इस अवसर के लिए सदा आभारी हूं। आईएफएफआई गोवा में होने वाले फिल्म के प्रीमियर के बारे में पूछे जाने पर, अभिनेत्री ने कहा, मैं संभवतरू इससे अधिक की कामना नहीं कर सकती थी।

इस तरह के सम्मानित और सम्मानित मंच पर फिल्म का प्रीमियर होना एक बहुत बड़ा सम्मान है। मैं इस विचार से ही बहुत विनम्र हूं। मधुर भंडारकर द्वारा निर्देशित, इंडिया लॉकडाउन सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। यह चार समानांतर कहानियों और भारत के लोगों पर महामारी के प्रभावों को दर्शाएगा। फिल्म 2 दिसंबर को जी5 पर डायरेक्ट–टू–डिजिटल रिलीज के लिए तैयार है।

बाहुबली को टक्कर देने आ रही है रणवीर सिंह की सबसे बड़ी पैन इंडिया फिल्म

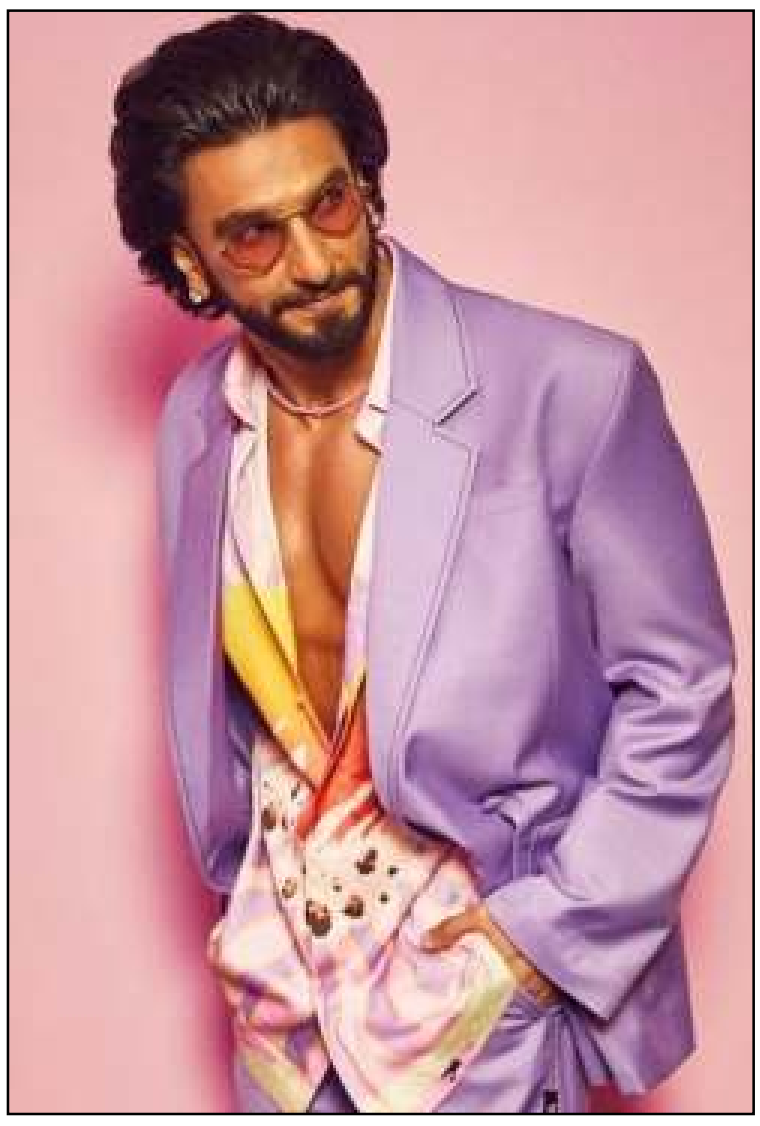

बॉलीवुड के जाने–माने एक्टर रणवीर सिंह अलग–अलग वजह से सोशल मीडिया पर चर्चा में बने रहते हैं। उनकी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती हैं। रणवीर सिंह कई बार ऐसी ड्रेस पहनकर सामने आ जाते है, जिसे देखने के बाद लोग हैरान हो जाते है। रणवीर सिंह जल्द गी आलिया भट्ट के साथ एक फिल्म में नजर आने वाले है। जिसको लेकर काफी दिनों चर्चा हो रही है। अब रणवीर सिंह से जुड़ा एक नया अपडेट सामने आया है, जिसे जानने के बाद रणवीर सिंह के फैंस काफी खुश हो गए है। खबरों के अनुसार रणवीर सिंह के हाथ एक बड़ी फिल्म लगी है। इस डायरेक्टर के साथ काम करेंगे रणवीर सिंह बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण के पति और एक्टर रणवीर सिंह ने बॉलीवुड को कई हिट फिल्में दी है। इसी बीच अब रणवीर सिंह का नाम एक नई मूवी से जुड़ रहा है। रिपोर्ट के अनुसार फिल्म मेकर शंकर बॉलीवुड स्टार रणवीर सिंह को लेकर सबसे बड़ी पैन इंडिया बनाने वाले है। इस फिल्म को एक दो नहीं बल्कि तीन पार्ट में रिलीज किया जाएगा। इस फिल्म की शूटिंग साल 2023 में शुरू होगी। ये फिल्म तमिल एपिक नॉवेल वेलपरी पर बेस्ड होगी। इस फिल्म में आपको रोमांस, एक्शन और बाकी बहुत कुछ देखने को मिलने वाला है। इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद रणवीर के फैंस काफी खुश नजर आ रहे है। अब फैंस को इस फिल्म के पहले पार्ट के रिलीज होने का इंतजार है। जानकारी के लिए बता दें कि ये बाहुबली से भी ज्यादा बड़ी फिल्म होने वाली है। रणवीर सिंह इन दिनों अपनी फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी को लेकर चर्चा में बने हुए है। इस फिल्म में रणवीर सिंह आलिया भट्ट के साथ नजर आने वाले है। रणवीर और आलिया भट्ट की ये फिल्म साल 2023 में वेलेंटाइन डे वीक में रिलीज होने वाली है।

विद्युत जामवाल ने क्रैक के लिए किया हेयर ट्रांसफॉर्मेशन

एक्शन स्टार विद्युत जामवाल, जो सनक, कमांडो फ्रेंचाइजी और खुदा हाफिज जैसी फिल्मों में अपने साहसी स्टंट के लिए

जाने जाते हैं, अपने हेयर स्टाइलिस्ट को कुछ नया करने की आजादी दे रहे हैं। अभिनेता अपनी आगामी फिल्म में क्लासिक मुलेट हेयरडू करेंगे। क्रैक नाम की इस फिल्म को भारत का पहला एक्सट्रीम स्पोर्ट्स ड्रामा बताया जा रहा है।

अपने मुलेट लुक के बारे में बात करते हुए, विद्युत साझा करते हैं, मलेट लुक का 70 और 80 के दशक में हाई–ऑन–एनर्जी फिल्मों में अभिनेताओं का एक लंबा इतिहास रहा है। यह इस लुक का इतिहास है जिसने इसे फिल्म की थीम के साथ जाने के लिए सही विकल्प बनाया है। 1990 के दशक के संजय दत्त को यह हेयरस्टाइल याद होगा, जो देश भर में प्रशंसकों के स्कोर के साथ गूंजता था। जहां स्थानीय नाई की दुकानों ने ग्राहकों को मुलेट बाल के साथ लुभाने के लिए संजय दत्त के पोस्टर लगाने शुरू कर दिए थे।क्रैक की बात करें तो फिल्म की शूटिंग हाल ही में शुरू हुई है। अभी तक मेकर्स की तरफ से कहानी और रिलीज डेट के बारे में कोई जानकारी साझा नहीं की गई है।

नार्कोलेप्सी:जानिए नींद से जुड़ी इस बीमारी के कारण, लक्षण और बचाव के उपाय

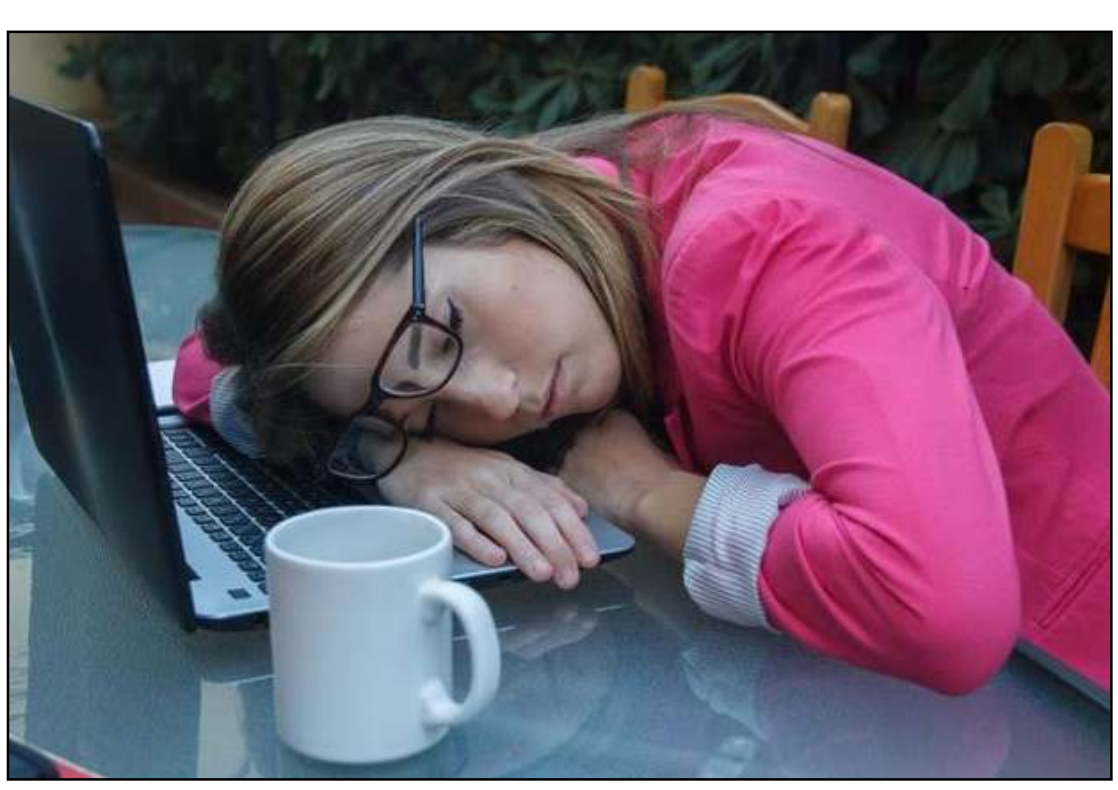

दिनभर तरोताजा और ऊर्जावान रहने के लिए अच्छी नींद जरूरी है। हालांकि, कई लोग कुछ बीमारियों की वजह से अच्छी नींद नहीं ले पाते हैं और ऐसी ही एक बीमारी है नार्कोलेप्सी। नार्कोलेप्सी से ग्रस्त व्यक्ति का स्लीप साइकिल असंतुलित हो जाता है और वह कभी भी कहीं भी किसी भी स्थान पर अचानक सो सकता है। आइए आज हम आपको इस नींद से जुड़ी बीमारी के कारण, लक्षण और बचाव के उपाय के बारे में विस्तार से बताते हैं।

नार्कोलेप्सी क्या है?: नार्कोलेप्सी एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है। इससे ग्रस्त व्यक्ति का मस्तिष्क सामान्य रूप से सोने और जागने के पैटर्न को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है। हाल ही में हुए एक अध्ययन के मुताबिक, लगभग 20,000 अमेरिकी पुरुष और महिलाएं इस स्थिति से प्रभावित हुए हैं।

नार्कोलेप्सी के प्रकारः यह बीमारी दो प्रकार की होती हैं– टाइप 1 नार्कोलेप्सीरू बीमारी के इस प्रकार से ग्रस्त रोगियों को दिन में अत्यधिक नींद आती है और कैटाप्लेक्सी समेत हाइपोकेट्रिन (एक मस्तिष्क रसायन) का निम्न स्तर होता है। टाइप 2 नार्कोलेप्सीरू इस प्रकार से ग्रस्त व्यक्ति को बिना किसी कैटाप्लेक्सी स्थिति के दिन में नींद आती है। इस प्रकार के मरीजों में हाइपोकेट्रिन का स्तर सामान्य होता है।

नार्कोलेप्सी के कारणः नार्कोलेप्सी होने का कारण ब्रेन प्रोटीन हाइपोक्रेटिन का कम होना माना जाता है। हाइपोक्रेटिन मस्तिष्क में मौजूद एक महत्वपूर्ण न्यूरोकेमिकल है, जो जागने और सोने के पैटर्न को रेगुलेट करने में मदद करता है। यह बीमारी ऑटोइम्यून विकार के कारण भी हो सकती है। यह बीमारी आनुवांशिक कारणों से भी हो सकती है। आनुवांशिक का मतलब परिवार के किसी सदस्य को यह बीमारी हो तो आपको नार्कोलेप्सी हो सकती है।

नार्कोलेप्सी के लक्षणः दिन में एक से अधिक बार नींद आना नार्कोलेप्सी का सामान्य लक्षण है, जो आपकी दैनिक गतिविधियों को प्रभावित कर सकता है। मानसिक समस्याएं, ऊर्जा में कमी और थकावट भी इस बीमारी के लक्षण हैं। नार्कोलेप्सी के कारण रात को नींद लेने में मुश्किल होती है और इससे स्लीप पैरालिसिस भी हो सकता है। इस बीमारी की वजह से व्यक्ति को अधिक क्रोध, तनाव, भय आदि का भी सामना करना पड़ता है। बचाव के उपायः डॉक्टर इस बीमारी के इलाज के लिए कुछ दवाएं दे सकते हैं, लेकिन इसे नियंत्रित करने का सबसे अच्छा तरीका स्वस्थ जीवनशैली अपनाना है। इसके लिए डाइट में स्वास्थ्यवर्धक खान–पान की चीजों को शामिल करें। अपने सोने के पैटर्न को ठीक करने की कोशिश करें। धूम्रपान, शराब और जंक फूड आदि चीजों का सेवन न करें। नियमित तौर पर कुछ हल्की–फुल्की एक्सरसाइज भी करें।